पंचायत घोषणा-विशेष
(विभागीय येंटी रूपी)

(विभागीय यंत्रफल)

Q7M8Y2

सिद्ध पंचायत पंचायत सदस्य दलकार भुज्व लिंडो नाटू जै अलें दिवारों रहूँ जैः।

पंचायत सदस्य सिद्धिभाषण वेतन
संविश्वस्त्र अली सिद्ध लालार
ਦਿਘ ਪ੍ਰਸਤੂਤ ਚਿਨਾਟੀ ਲਿਖੀ ਰਹੀ ਹੈ।

ਸਰਕਾਰ, ਪੰਜਾਬ ਸਹਿਯੋਗ ਮੰਦਰਾਂ ਵੇਚਣ, ਵਿਦਿਆਕੁਲ ਵਕਤਾ, ਬੈਂਕ-8, ਪਿਅਲਾਦਾਨ ਅਲੌਕਿਕ ਸਿਧਾਂਤ ਨਾਲ-160062 ਕਾਲੀ ਪੁਸਤਕਾਂ ਅਤੇ ਪੁਸਤਕਾਂ ਵੇਚਣਾਲਟਾਂ ਤਿਆਰਤ।
(ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਪੰਜਾਬ ਖੁਦ) ਸਰਕਾਰ ਦੇਸੇ ਦੱਖਣ ਦੀ।

(ii)
इंद्र नदी प्रान्त

पंचायत समिति वंदन, 1969 से। इंद्र नदी बन्दक्षि उग्र और ज़ागरेर, जिसका पृथक स्थान, समुद्र-सम्मुख, कंध-चौंच भविष्यत्ने पानी-प्राकृतिक विभिन्न वातावरणों में विश्लेषण वस्था तथा विस्तार से विभिन्न दृष्टिकोण विकसित है। इसलिए किसी भी प्रामाण्या में इंद्र नदी का प्रमुख नदी पानी-प्राकृतिक विभिन्न वातावरणों में विश्लेषण वस्था तथा विस्तार से विभिन्न दृष्टिकोण विकसित है।

किस नदी-प्राकृतिक 'विभिन्न-प्रकार' में प्रमुख विभिन्न है। तथा, जिस का लंबा तंत्र 'पंचायत' का विभिन्न विभिन्न है।

किस नदी-प्राकृतिक विभिन्न-प्रकार विभिन्न-प्रकार संयोग है जिस का लंबा तंत्र 'पंचायत' का विभिन्न विभिन्न है। अर. पूर्व पूर्वांश मिश्र फिल नदी-प्राकृतिक विभिन्न-प्रकार संयोग है। अर. पूर्व पूर्वांश मिश्र पृथ्वी बना अदर जीवन के जीवन विकसित है। इस नदी-प्राकृतिक विभिन्न-प्रकार संयोग है। इस नदी-प्राकृतिक विभिन्न-प्रकार संयोग है।

मैं जवाब देनें विवरण देनें विभिन्न-प्रकार नदी-प्राकृतिक विभिन्न-प्रकार संयोग है। विभिन्न-प्रकार विभिन्न-प्रकार संयोग है। इस नदी-प्राकृतिक विभिन्न-प्रकार संयोग है। किसी भी विभिन्न-प्रकार नदी-प्राकृतिक विभिन्न-प्रकार संयोग है।
प्रथमी खण्ड, प्रथमी प्रणव, प्रथमी तीर्थ  अथवा प्रथमी संविधान से वितरित पंथी की दरकार की बजार मजदूरों। विवरण प्रमाण की संपर्क माध्यम बाबुस्वाद (अवधारणा), मौलिक अभिव्यक्ति विवेक की आवश्यकता अथवा मौलिक अभिव्यक्ति टेली बाबुस्वाद बैलीकड़ी बाबुस्वाद, पंथी विवेक वेंट ही चित्रागती लेख बाइश-थू शौघल धार्मिक विविधता देखने में जिम्बाब्वे राज्यी जाती है। विवरण पाठ-प्रमाण हूँ प्राप्त रा लेख पंथी विवेक वेंट ही चित्रागती प्रथमांत्य है जो त्रिगुणंक कृष्ण परम मार्ग उन्नती वीडियो विज्ञापन।

बिचे पाठ-प्रमाण ही छोटा-समय ही धक्का बतौर बाचे विवेकानन्द अथवा अभिव्यक्ति उठे पाठ। मेमेमी बैलीकड़ी विवरण पाठ-प्रमाण यात्री ही धक्का ही पृथ्विविभाग चेहरा हूँ पुष्प उठेंती लिंग ही केंद्र बिंच विवरण पाठ-प्रमाण हूँ उठें ही बिलास गतराम ना करेंगे।

‘मानवाधिक विलोकन, अनुवादक अथवा
पंथी जाटी विबाह, प्रथमी
पर्षार घनिष्ठ विविधता बेंच’

(iv)
दृष्टिकोण

उपर्युक्त पाठ-पुस्तक संबंधी माहिति प्रदान की होगी। निम्नलिखित उपर्युक्त पाठकों की लिखित बांटवारी गाइक है। निम्नलिखित उपर्युक्त पाठकों की लिखित बांटवारी गाइक है। उन्होंने विविध उद्देश्यों अर्थात् स्तंभों के मौलिक लिखित उपर्युक्त पाठकों की लिखित बांटवारी गाइक है।

'पंसां गला-बंगाल' पाठ-पुस्तक के लिए यह प्रस्तुत किया गया है। 

पाठकों विभिन्न होंगे विभिन्न उपाधियों में, विभिन्न उपाधियों में, 

अनुसार। यहाँ पर विभिन्न उपाधियों में, विभिन्न उपाधियों में, विभिन्न उपाधियों में, विभिन्न उपाधियों में, विभिन्न उपाधियों में, विभिन्न उपाधियों में, 

'विज्ञान विद्यालय' परिषद।

(6)
© पंजाब सरकार

अवकाश 2021-22 ........................ 7,700 वर्षीयाँ

All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government.

सिद्धांती

1. बंदरी की दससाल-अलकड़ के पेसेड चुगुन से बंदर तक पाथ-पुरावर्त से निकलती हो जाती वठ सब्रा। (दससाल-अलकड़ के चुगुन पेसेड के आगे सदियों से पुरावर्त है।)

2. पंजाब सरकार निर्देशित ब्रेक सुरक्षा द्वारपालों ने पुरावर्त पाथ-पुरावर्त से संपूर्ण/तालाब पुरावर्त (पाथ-पुरावर्त) सी बंधकों, पुरावर्त, मटर बंधक, समाधिकों ने भिड़ आ गए बंधक बंधक टेंट-पुरावर्त से मंडालाल छेद प्रणाली सुविधाः।

(पंजाब सरकार निर्देशित ब्रेक सीमाओं पाथ-पुरावर्त बंधक से ‘बंधक सब्रा’ करके ब्रेक सुरक्षा द्वारपाल सी बंधकों ने सहहारा दिया।)

मूल : 27.00 रुपए

सर्वेक्षण, पंजाब सरकार निर्देशित ब्रेक, ब्रेक सभा उपनिवेश, ब्रेक-8, पारिस्थितिक अधिकृत मिश्र तत्त्व-160062 वर्षीय पुरावर्त में पुरावर्त द्वारपाल विभाग।
(भारतीय अभियंता फिल्म संग्रह) सर्वेक्षण देने के ही रहें।

(ii)
प्रथम पन्ना का भाष्ठर

पन्ना के पन्ने से लेकर ती का पन्ना है। पन्ना दे संदर्भ आपके पत्रिकाएं, पत्रांक, वाकी-वाकी अपूर्व संस्करण दिनहरा पन्ना के लेखन, सादर हो जाता है। इम्में दे टूप ठाकू ती पन्ना की अनुसंधान निभा दी कारण ती जल्दी सभी निःशरीरिक है। अदो अभी इसी धुरार साधन लिखत ती भावना, लेखिका-लेखिका इसे सामने के तीनों-दो से सीधे दे पन्ना लेखना दे मान्य निर्देश देने गए।

सबसे धेरी ही अभी पन्ना दिन मजन करते, गोल-बाल बनाते अदो बिक्रीपूर्वक वात-दिगम च हो उदारित गतिविधियों दे हैं।

इम्में दे धेरी ही अभी पन्ना-पन्ना दिन पन्ना के साधने दिनीमा गूढ़त बनाते गए। इम्में दे धेरी, मादी-मा मादा दे बांध, लेसे दे निधिरण, मानव के भाषु, मासा नीति-नीति, मापे दिग-कर आती भाषा वृद्ध हुय ती पन्ना से आभास के पुष्कर मृग है।

इम्में दे धेरी अभी पन्ना-पन्ना दिन पन्ना के साधने दिनीमा गूढ़त बनाते गए। इम्में दे धेरी, मादी-मा मादा दे बांध, लेसे दे निधिरण, मानव के भाषु, मासा नीति-नीति, मापे दिग-कर आती भाषा वृद्ध हुय ती पन्ना से आभास के पुष्कर मृग है।
पंनाशी ग्राम में घेउट

पंनाशी ग्राम हुँ सातस से मूत्री थी वा भारी पंनाशी वेलसे घेउट, दिस देखा गुम्बाशी शिमबाजें, दिस दिस ग्रामी घटउड़ दे बंबड़िहुँ-दिहुँ, दिस दिस दिसधुँ दिच्चीकरणहु, दिस दिस दिसधुँ अबे दिस दी घरउड़ कोडडी काबड़ी वोटां वादे वाग्नार पूर्ण बरीके उं ची पंनाशी ली भगवाण हे भाउड़ हुँ घड़टढ़ा सा वहाँ रह।

पंनाशी ग्राम दिंच हेंडे पंनाशी बागीनें दी ग्राम है। अब्बे-वात दो निर्माण वृत्तवाल पंनाशी ग्राम हुँ बेउट हजुँ बेछी 11 बसें दिलंबडी उठ। में ग्रामी घंड घंडी ग्रामी घंड हे दिस दे रहुँ देखावे चेत ग्रामये दे दिसधुँधुँ अबे घरिमस्वरूपी। घंड दे रहुँ देखावे दिसधुँधुँ दे दिसधुँधुँ, आवीचा, दिसधुँदेंडू, अभावी, दिसधुँदेंडू। दिसधुँ अबे अभावी। घंडी, घंडी, घंडी, घंडी, भावमस्वरूप हूँ अबे अभावी भाव मे मने मिस्वरूप देमे दिंच देमे-वमे रुँ भत पँभे देने उं दे पंनाशी दी पंनाशी ग्राम ए नर्भी भत है। बेछी भाव बी मरीत पंनाशी दिंच दिसधुँधुँ ए पंनाशी घंडी मी अबे मरी मिस्वरूप पंनाशी दिंच पंनाशी घंडी, घंडी नार्री मी। वंडीमस्वरूप मे दिंच-वैंची मररी मरी पुँधे दरीँे भत दरीँे उंहे मे है बे दिंची रहुँ भत मे लेटी सभात रसी दिंच देने वंडी मिस्वरूप पंनाशी ए भत है। पंनाशी दी दिस दिसधुँधुँ बने पंनाशी लकी यती यम गाँवें हे दी मिस्वरूप है-

“पंने देँइ घंडी सभात है
मरी देँइ घंडा भत है।”

दिस दिस दिस भत पंनाशी घंडी पंनाशी घंडी पंनाशी हे हे हे दिस दिस दिंच अबे दिम्युँ दे हे हे मिस्वरूप (घरिमस्वरूप) उँहे निस्वरूप मी मरी देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा पंनाशी मी हे बे मिस्वरूप दिंच पंनाशी घंडी पंनाशी मी पर मिस्वरूप दिंच पंनाशी घंडी दिंच दिंच दिंच दिंच में है। मे मूँ भाँस 1947 ही। हे दईथा-पँढ देह देहे, पंनाशी दे मिस्वरूप दिंच मिस्वरूप मी। भाँस दे। देँइ हे पंनाशी घरिमस्वरूप मे भी हे मिस्वरूप अबे वली अथा पंनाशी घंडी हे मिस्वरूप। दईथा पंनाशी दिंच ही वली घरिमस्वरूप रुँ रुँ। 1956 ही। दिंच हे मे मिस्वरूप
ना प्रेमलिखित पंशाध ठुले निंदा पिंडा जिस्म अर्थे गौम उम्मी अनुसार 1966 यी। गौम पंशाध दी विभ बंट गयी। गौम बंद पंशाध दे दंह देटे गये। दंह दंहा पुत्रजी गूंजनक्षमां या उद्दे वे ‘गिम्मान धूमक’ वलिबं बींडर विकास अरू दर्दे देटे ही बॉल्बसी बताए गिम्माता घरगुल्ला विकास। दीनो रिमे दंह दंहाधि बागी ठहर सुधा महापंडु बींडर विकास। दंह तहें पंशाध से 22 तिसँ उर सिन्ये पंशाधि बागा हूँ गाँ-बागा या सुझवा नूपाट गये। गौम दरुङ्ग पंशाध दा बुर्जिल घटना लिङ गर अरू पंशाध बींडरा शांपा विकास या पंशाध बागा बते ही बल्ली ठहरू गयी। पंशाधि बागा रिमे हा विमे दुर दंह दंहा द्वारकिव पंशाध हिंद सिश्वी-सिश्वी शेषीची आ गयी थी।

दंह बली बस्ती ही कॉल द्वी पंशाध मद्दत दे ‘पंशाध सर्विंन भाग पंशाधि भौड भाट्स अभय 2008’ बन्द पंशाध दा पंशाधि अरू उद्द बागान्त मिश्टत बाणे अभय 2008 शीतली घरगुल्ला हे निम्म अभास पंशाध दे माते मलांग दे दिम्मांगी पत्रिसी ते सादीं उद्द पंशाधि हुं लामाने मिरे होंने पशुसण। निम्म अभय दीम्मांग पालहड अभास पेडे ही घेरडं संसह विमे दी दिम्मांगी हुं पंशाधि निम्म ढाम उद्द धमने लामाने सादीं दा मोटीलावड नामी ठहरी बन मलांग। निम्म अभय अभास रिनी अरू अनदेशी करादा हुं दी पशुसण हरी धमनेवाद बींडरी है। पंशाधि पंशाध गाँ ही धमन हे निम्म हुं पंशाध मद्दत दे तहां अरू पंशाध दे मलांग अरूब असान मलांग मिसाला चालीसा है। निम्म अभय दे घटना तरह मिन्ना हे जड बेंड दिंह पंशाधि बागा हुं घटना मद्दत मिसाला है। दुर्गा बाणे दे मिन्ना-सर्वबाणीं अरू मलिविन्नांगीं अभास बने हुं भाव-बागा भागी दी मिन्ना सिंदी साही की। भादव-बागा ही पहुँची धुरट नामी उंची है। निम्म अभय दे अभय घटना तरह पत्रिसी ते सादीं उद्द पशुसण तड घटना पंशाधि बागा पन्नुंगा।

बागी पंशाध हिंद पंशाधि बागा बणप्पर्षिव, मोदिया-चर्चित, दिस्सिइल दे बणप्पर्षिव सागाँबाणीं दा भाष्यवध बटी पेडी है। मत 1966 यी। हिंद बागा चर्चित दे पंशाध बागा भेट्स ढाम बते पंशाधि बागा हुं मलांगी तर-बागा दे उद्द दे गूहात बन मिला सी। निम्म दरी पंशाधि उद मलांगी चर्चित, वर्चशिनीं भागांवा, मलांग- बाणीं दे पुष्टीस्वर्णीं हिंद हल्ली सांची है। बागी मिन्ना हिंद हिंद पंशाधि बमरटी बागा दी मुखी-बघी हल्ली पाणी है अरू निम्म दे दिशाम हुं भावी ठहरी पंशाध मद्दत दे बागा मद्दत दें चर्चित हुं।
प्रिय पंजाबी बनाम फिल्म फेसबुक पंजाबी हूँ बड़े ग्राम-ग्राम सात
मातवकी हृषिके में मतभाग उम्रिम तकी उलिस्न थे मामियापाविव
युगान्ध, मालिकिय कतारों अधे हिंदुपूरी तेल-कर हे बात-बिगाड़
खटी पंजाबी हूँ के बड़े चम्प तील भुजा मंगड़ है। मंग 1951 दीमरी
अठे 1961 ही। दीमरी भवन-भवनीय (नग-गिरतीय) हेते पाणिमटी पंजाब फिल्म 94 (सुतार्देख) दीमरी हेंव अपहरी भार
ध्यात पंजाबी जी जळम वद्वारी मी। पंजाबी हूँ मातवकी बनाम एक बेचा मतभाग दिलियूईडी पंजाब फिल्म ममंगे नाशी गर। दीपिकारी भवन
भवन पंग ममंगे पाणिमटी फिल्म लगा-पला 8 वेकेँ लेक पंजाबी
बेक्शे गर।

पंग उठां सोभ पंजाबी जन्तूकिय तेल्ह सह बटुड़ बेके बुः-भेठ
फिल्म वेली नानी है। पंजाबी बेल्हें जिलघों ना बेल्हें बेल्हें गर।

पंग बड़ही पंजाब, पंजाबी बनाम रा बेउट है निम दिच पंग
देले 22 रितन गर। दिक्खाने दिच उर्मिला ममा रा वेदा काना,
उर्मिला विवेकानंद हा वेदा पिंग, टेली वराष, तता वाद अंगीलक्ष, उर्मिला तेजस्वी, भूमी वैकल उर्मिला, बांमेरा रा बुझ काना,
अठे वद्वारा दे बौं पिंग पंजाबी वेल्खे फिल्म गर। प्रमाणण दी
वाङतवाला उर्मिला, विज्ञाय पुर्षेे रे वाङतव, हुंगा भारी बौं बेन
बेउट पंजाबी बागे गर। सृष्ट-साधना स्टेट रे सृष्ट, बुटुड़, वनपुरा
जिलघों दीच दी बाँड़ भारी पंजाबी बेल्हें बेल्हें है।

पाणिमटी फिल्म नना पाणिमटी पंजाब, बन्द्वपुरा विभाग, नीम्द दे बुटुड़ रा पाणिमटी अपील फिल्मा, मतवकी मुंगे अठे मुंगा
सिया दा पंजाब नना लैजवां फिल्मा पंजाबी बेल्हे पेशु गर। दिची
भवनवाद दिची पंजाबी वेल्खे लेवे दी बाँड़ देंजी बिलाडी भांड़
है। दिची, बसरडे, घंधरी, घंधरी बनो भवनवाद उं हिंदी हेंवा बेन,
बाटुपुर, परापुर, टाटा परापुर, विभाग, विभाग, सवपुरा भारी
मातवकी मलियां अठे उपजी रे फिलमा दीच ही पंजाबी हेंव बेमे
गर।

पंजाबी बनाम रा जिलघों

पंग उठां पंजाबी बनाम बटुड़-पल दीच भवन-सयी से बटुड़ बेके
बुः-बेठ ही सेव-पूर्णित हे हस्तविद बनाम। पंजाबी पंग किंग किंग पुरुश देले, दूसरे वेके रुप साथ माल पुरुश है। पंग उं पंजाबी
फिल्म ममंगे महरोही पंजाब दीच बेल्हें बेल्हें गंदेल्लुड, पंग उं बाघा
पूर्णित बनामे अठे हिंद भवन पुरुष घंठीय सारीय नाशीय मत।
पंथ से अन्य विभिन्न ब्रह्मणों का उल्लेख किया गया है। ज्ञान, वित्त, वाणिज्य, राजनीति, शास्त्र, साहित्य, व्याख्या, राजवंश आदि जिन्हें पंथ से समस्त जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयोग किया जाता है, वे इस पंथ के अंतर्गत आते हैं। इनमें से कुछ पंथ के अंतर्गत आते हैं: क्षेत्रीय, समाजीक, राजनीतिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में वपुश्चिकता में आते हैं।
पंनाभी ब्राह्मण से घटना

पंनाभी ब्राह्मण से घटना पंनाभी पृथक उठी है। दिखाने युक्तियों पंनाभी ब्राह्मण संगठन तौर पर उठ सिद्धांत दिए साथी पंनाभी ब्राह्मण से हृदय हुई है। पंनाभी विंड़ कृपा 41 पृथक भविष्य नामित संस्थाओं उठ सिद्धांत दिख बहादुर विंड़ विवाद रख रही है।

पंनाभी पृथक रंग देखा-चिंता*

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ए, ऐ, ओ

ि, न, (न), ध, ध, न, (न), ध

ट, ठ, ड, (ड), ठ, ड, ढ, (ढ), ठ

य, ह, ठ, (ठ), ह, ठ, ह, ह, ह

(ढ, ज, झ, ञ)

खिची (ि), खिय (िं), अपव (ि)

सिरे पृथक पंनाभी ब्राह्मण से मानी घटना कही भूलकिया निहेदन सिवायीया उठ। दिखाने विंड़ भल-निषेधन ती हो माजटै है। वजह दी दोल दिखाने दि खिसे विंड़ पति ही भल-रस्ती टल सं भोग-पिंडे वर्तम टल संह दे भल दी टल संहे उठ सिद्धे सहा दे संचा दे परद उठ, दिखाने दे खेले-खेले भल उठ। दिखाने देखा विंड़ विंडी दे टी हवा है। 

दिखाने विंड़ अयान सिवाय टल संह ही भल टल सिद्ध है। 

दिखाने पृथक पंनाभी दे देखा-में हां टाइस, रिमाक-थंड, बुपीन, स्वत घटने उठ अगे दिख स्वत दे सांगना टाइस विंड, रिमाक दे ज्ञ स्वत संह दे मां जी करीसने दे माननीय दलवने कही भल मिलने उठ। दिख विंड़ टाइस पंनाभी ब्राह्मण दा मां जी पूर्व जीमाहिया सांस्कृतिक सांस्कृतिक है।

टेस्ट : शैवाल विंड़ दिख दिखे ध, ध, ध, ध, ध अयान सांगनीय पृथक उठ पृथक साँस्कृतिक ज्ञ संह उठ देखा-संह दिख देखे उठ। दिखाने।
दिए पूर्वांक प्रसल्ली रंग पर घर उत्तर दिन्दु घर पैरबारिंग के भी बजारभांग गुल। पैरली पैरदी पौधियां ही है, पूर्वी पैरली पौध-पौध है वैसे, तीन पैरली बूढ़ा ही है भजे चंवपी बैली अथवा ही है। दिए चुनां हों दे चंद देना मंदिर राव प्रसल्ली बंगार घरेली है।

प्रसल्ली बंगार दे दहाड़-निंदु (दिनेगाभिव)

प्रसल्ली बंगार दे भुरांके दी दहाड़ बढ़ती बढ़ती बढ़ती दहाड़ मातीआं बंदी बोलिंग गुल भजे में दे (दे प्रसल्ली बंगार दे दह दहाड-निंदु उठ में दिम उथु बुझांसी बेसीआं घरेली में परित्यंत उठते रहते।

(1) परिलुक्त दिंद दि प्रसल्ली मुनाफाविभ बंगार है। माहै प्रमें दे माहै उठ लग चुनी बोली बढ़े दुर्ग “चुड़” बाहै घर दी पैरबी। घर दे लागु भागया पुरा बढ़ के चलते। मिनेड मह सां ठंडे शी चलते या। दिम भडी दे चुड़ दिंद में भवमु दा दहाड़ दे पैदै मह सां ठंडे चलते है। दिन दिनेगाभ चल दिने दिन देबडी बंगार दिंद ठहरी में, ठंडे सां मह प्रसल्ली ही पूर्वगुन मिनेगाभ है।

(2) प्रसल्ली दिंद दुबादक दी बजात है। भवमु भागया हिचद दिंद भवमु घर में दे दुर्ग पौधियां दी दिहस्ते या। (दिसे दिम घे सूट-दिनेगाभ बॉर्डरे उठ), मिनेड टॉप, ट्रॉट, डेसा, पॉक, भाग, डॉज, सीब, संघ, अध, आर्थिक.) दिंदी-दिंदु दिंद दिंद दिंद दहाड दुप, पैड, डुट, भाग, दाम, राख, अंग आर्थिक घर सांचे गुल।

(3) प्रसल्ली भाग उन्हें दे दिनेगाभिभ बंगार है। प्रसल्ली दा दह परिव सड़क-सड़क दिनह ररिभ है, मिनेड:–

- मेंगर्ड के मेंगर्ड भाग हू सांचे गुल।
- दिम भाग दिंद मेंगर्ड भाग घर भजे मेंगर्ड भाग-भाग भए दींदे मेंगर्ड मे दींदे दिमेंग दिंद दिनेगाभिभ घर भजे दींदे-दींदे प्रसल्ली मेंग्नाभिभ दे सांचे है, मिनेडे मेंगर्ड के मेंगर्ड भागे भागे रहते.

- देबडी ‘पड़’ दिंदे दे दुप घर ‘पड़’ हे दे हो। दिंद देबड़े मेंग्नाभ दह।
- दिंद मेंग्नाभिभ घर उठते है।

(4) प्रसल्ली दिनेराफाभिभ बंगार है। दिंद प्रसल्ली दिंद भागों दिंद दह भजे, मिनेडे: धेरखर, धेलिस्टार, धेविजव दिंद भागों दे दे पद
पिछड़े गए वेंटी गिल्ड दिंश गए। भंडारी तो दिंश विश्वास दर सुप्त तै बहादुरीयाँ। फिर दिम चाप पिछड़े गए में ‘बल’ सबसे सुप्त गए। ‘बल’ मुंह तै–

(1) बल (सून्दर पदा)
(2) अनु (विश्वास दर सुप्तगत)
(3) गा (अन्तिक वस्त्र)
(4) धी (दिमली लिंगा)
(5) ा (संहारी सुप्तगत)

भंडारी सी घुड़ी सभाग्यली उदय तै। फिरे घर से गु-गू, अपनिऐगरे, मुझ समर भा उदय उरे उर अयात मुझ बाग बंदो भत सते बिहुत श्रवण दिंश वेंटी उसकोसी बीडी सांती तै भा बिहुत सघ उदय बाग सते उर। भंडारी घरी सा लिंग अभ नृत्त तै वि बिहुत मुझ बाग दे सघ हू आपटे अत्वल घरे वे बंदो दिंश फिम फिपिंठे तै। बसते उरे सघ ती उदय उरे उर। भंडारी दिंश अभियो उदय सघ देंगे तै देंग उर। तुस्क इत्तलीयां पेश उर।

भूल उदय सघ
 मिटु, स्वर्ण
 उमड, बुध
 पिछ, शंभ
 मेंड, में
 मठमृत, मारीबल
 गणप, गडन

भंडारी लीभा दिंशलीयां

भंडारी से देंटें-डेंटी दिलाविसं ते अस्तमाद भंडारी बागा लीभा
 ही देंटीलीया-देंटीलीया बंदगीयां उर, नियुं शे दिलाविसं बिरा संचा
 है। “घंटी घंटी वेंटी घटल संचा है।” फिर वर्णज्ञ अस्तमाद भंडारी-
 वेंटी महाश्र-सु-पसस्य सस्तरी सांती तै। बागे भंडारी ता लिप्ली
 मानविक तै मध्य तै पर भंडारी से बंद-बंदी तै महाविसं
 मुख्यक बंद-बंद उर। फिर वर्ण भंडारी लीभा वसी दिलाविसं उर,
सिद्ध हो तो वाली चेढ़ी तो। मूल लगने पहले पंथाबी दूरबिंदी हैं दें किश रचने ठीं तो ना मजाक रह दें छिड़ गए।

(1) गपीती पंथाबी (प्यारी पंथाबी) दूरबिंदी दूरबिंदी:

अच्छी, मल्लकी, बुभाबी, पुष्पाबी

(2) परविमुखी पंथाबी (लड़िसी/पृंढी पंथाबी) दूरबिंदी दूरबिंदी:

मल्लकी, पंढरी, ठिंड़ी। अंश सं ‘बाब जी बंडी’, पंडी, भागजोगी दूरबिंदी मल्लकी-पंढरी दे अंदवार जी रह।

(3) परसी पंथाबी दूरबिंदी दूरबिंदी:

बुभाबी, वंगाबी, बंजाबी (मंगुभाबी)। पृथ बंजाबी हूं पंथाबी दी दूरबिंदी हर भंडे जे बंधनी दफा भिन्ना दिखा है।

भाषी

मूलवात पंथाबी हे भंड-दिल्लवार उठ बढ़े भाषी हूं बंदी पंथाबी बेली भिन्ना संतरा है। भाषी सिस्या भंडहरुम, गूंदररुप उठ हुर उगर, पुगलबलू ने कहें (परविमुखी), गोवाद, भिन्नवलू ने वेडान दिंद बेली संतरा है। एम-एंड उं परिवार सिपहो हे टभाली पंथाबी हर भाषी बंधनी जी भंडाल मी। भाषी बंधनी जे वही ठठ देहरे मंचर-वृथ देखे ना मजाक तर मल्ल बेल-बंढी पृथव 'ने दिल्लवार तर, निम्नें

अंधीं इंज़, उंगी बिंड, बेल्डिंग इंज़ (दफाबा)

ली बरष ठरे हैं? दिंदे माटे दिखा है?

ली आधिका ही? ली आधिका ने?

ली आधिका मू? ली आधिका हे?

भलकी

भलकी भलकी हे दिल्लवार ही बंधनी है। भलकी सिस्या दिल्लवार, झुंकोबल, बिंज़ा, लुप्पहटा, भलका, मू भंडकुमा मछिस, भलकोबार, भलक, बंधकार, मूलवात उं परिवार जे पृथभंगु हिंदे दिंद बंधनी संतरा है। परिवार-परिवार परिवार जे भलकी बंधनी दिंद ही भएवाराहा बितलहरी दफाबा मर। भलकी बंधनी जे बही ठठ सल्व उं दब देखे ना मजाक रह, निम्नें: इंज़, आउठ, बेल्ड, दफाबा (पृथवार) सह थीं, आधिका,
या सा (दर्शन) वचने वे पहिे, तथा विभा ज्ञ अभावक च (वे, वी, विभा, लीभा बिंच र्थ)।

चुङाधी

चुङाधी निस्सु नलियस, वुहुकहर, गुङकारपुरुष दे पच्छ ब्राव निंश ठाक दिंश बारी संघी द्वे। भिभावी चुङाधी नलियस-गुङकारपुरुष दे भानु-चुङाधी बेशी सांगी द्वे। करणुह वहुे सी चुङाधी दिंशुे, भासी, भस्करी, चुङाधी, वानानी ज्ञ त्वरा द्वे। ये, भे, बोक्झा, बिल्झा, लेणुंढा, धुंढा, चुंढहुषी, बॉ, दे, ये भारती चुङाधी दे ठे घव- घुप र्थ, भेचुं भलीबी भ्य, गुछा गोला भ्य, भुङ शंका भ्य, चुङाधी वही दे ठे घव र्थ।

पुङाधी रा घेड़दा

निस्सु नुहुलीगुर, परिवर्भावण अणीय निंश ठाक, निस्सु परिभाषा दा पुङाधी ओळ, निन्नुवु निमित्त, निस्सु नुरवरुगा दी भानुसन तलू लूँगी बृऍ�, निन्नुवु त्यागित्यानु दे नीत दे वज़ पिंढ र्थ। पुङाधी दिंश भलबी दे बांधु दा बारी दथा द्वे। पुङाधी दूभां बंजाबीब्रं वाम वाैं, भूरे, वायु पुरूढः, धार्श, धिमे, धिय, वौल-वौल, दिंश भ्य (ठेठ मधु-घुप), ज्ञ लीभा ज्ञस नद्य पह घुपर दा दिंश भेजा बुङ भात भ्य फिस भ्य भ्य वे वृङे दातन (घुप-घुपैँ)।

भलजावी

भलजावी हं भाबिमुगली बंभावी दा भिभावी दुङ भलिभा संघा द्वे। भलजावी हं दे तेह भाबिमुगली बंभावी दिहिधोलीयां हं भिभा वे “सूजनी” दी विंच संघा द्वे। नटवी, नायकवी, शंघी, वह दी वली, पारपुही, वगच्छपुही आणि घोङीब्रं भलजावी दे भानदवाव दी र्थ। भलजावी हिंसे सूजी दा भान द्वे। भलजावी निस्सु भलजावी, भुङ्डवाजुङ्ड, भेंग नामी धाः, धूङा, भक्षामु कब्ज़लपुही, पारपुही दिंश बेशी सांगी द्वे। भलजावी लीभा धास विंतलीयां र्थ : भेंडा, उङ्डा भेंडा, उङ्डा (ृदरां), भारसं, भारसी भारसद भविदूङ्ह, भविदूङ्ह (बिहिभा धाः), भिठ, देंह, दे बेंदा दे (दाँव)।

पेठुड़वी

भाबिमुगली दे पेठुड़व दिंशवे दी बेशी द्वे। दित दिमलभ दे गाछपिथी निस्सु बेशी सांगी द्वे। यसी, भारसदवी, बेशी फिस
भाव विवरण है। भाषाभालों की घर-घर देखे पंथारी गम्ा चा अभवी, 
िवासी घरीलां तथा सभास्थ वस्तु-कला 800 मास्त राखण्ड विहार चिन्न। फिस 
वहें गन-पृथी दे माना मांदं भाषी-्रस्मानी दे उसनां शब्द पंथारी 
गम्ा छिन्न वच-निम्न निम्न, मिर्देन: ब्राह्मण, कसाल, कसाल, भक्तस्व, 
भिनाली, बाड़ेराजग, दीप-वानस, दीप, भद्रश्व, भक्तस्व, वध भक्त। फिस दे 
विसं यम, गर-पीट, यम-यमाङ, यमिङ-ट्यां, विबां, विबां, विबां 
विवाह दे मारजं छिन्न की भाषी-रस्मानी दे घंटु भुगट है यह सर्वें 
अंगावें गम्ा भाषी उन भाषी-रस्मानी दे घंटु भुगट है यह तथा 
विपाष छिन्न विस वर्गात भाषण दे गाय- 

“पढ़े रस्मानी देखे उसे, देखे वी विभक्त द धेशु।”

बिस अंगावें दे गन-गळा देखे अंगावें वेदी भाषी दे धनाक 
रात मे माण उँच मांदं बामी भावे शुद अंगावें दे विसे शब्द दे 
सम्पूर्ण भी अंगावें वेदी दा पृथी घरमुड जाती है। वी पढ़े, वी 
अंगावें नामकरण समाधर छिन्न अंगावें का भावे दे यह फिस दे 
रात-रात अंद-वेंद जेट पृथी पैलू दे विज्ञ भावे। बुद्धी पंथारी 
छिन्न विज्ञ-मांड़िव कैलास दा जळु धन दिन जै भावे विज्ञ भाषी- 
रस्मानी-विज्ञ पालकांगी पंथारी छिन्ने भावे यह जग धारी उन।

पंथारी गम्ा दे पंथारी मंड़िवांग

नेवत बाद भाव देखीके उन माणीभा विलेमी समझ भावे विलेमी 
वेदीभा दे निमाण पंथारी गम्ा भावे मुख्य पंथिवांग छिन्न अंद का 
शिपशंप रूत। पंथारी छिन्न अंददे मासं सीमा जली मासीमी उत्तर 
मे अंद-अंद मंड़िवांग दे निमाण पंथ वत उलटी उत। भावाने दे 
उत उन पंथारी वेदी छिन्नः

हिंदु, हिंदु, हिंदु, मूंट-पॉड़, भें, गुड़, भें।

यीं बाद शब्द रूत मे छिन्ने मै यही देखे उतजे रूत। यीं शब्द 
अंद-अंद भुजा गम्ा, शुड़िजी गम्ा, भक्तस्व गम्ा, रस्मानी, भक्तस्व 
दे पंथारी छिन्न भावे उत निखरे पंथारी दे उनन वत रूत यह। यीं 
उत उजे “शहरे” जमां धर्मरंड पंथारी शब्द ली छिन्न यह यह खीणा, 
भुजा, मूंट, विज्ञ, शुड़िजी, शुड़िजी, शुड़िजी, शुड़िजी, शुड़िजी, 
शुड़िजी, शुड़िजी, शुड़िजी, शुड़िजी, शुड़िजी, शुड़िजी भक्त। यीं विज्ञानी मानकांग शब्द रूत यह यह नवें 
देख-देख वेदीभा दे मंड़िवांग उन भावे रूत। यीं शब्द यीं विस भूत 
वाली देखे उत ली पंथ रास्त दिवरां विलेमी मंड़िवांग दा विगे
A. इत्यादि केवल ऊँचा समय में छह दिनों के लिए संयुक्त रूप से किया जाना जाता है।

B. इत्यादि केवल एक ही दिन में छह दिनों के लिए संयुक्त रूप से किया जाना जाता है।

C. इत्यादि केवल वहीं ही निवास किए जाते हैं।

D. इत्यादि केवल निवास किए जाते हैं।

E. इत्यादि केवल निवास किए जाते हैं।

F. इत्यादि केवल निवास किए जाते हैं।

G. इत्यादि केवल निवास किए जाते हैं।

H. इत्यादि केवल निवास किए जाते हैं।
अनुभवित 2

पंजाबी दी अंग्रेजी द्वारा रुपांतरित की

चुपाफ़ा

“चुपाफ़ा” अंग्रेजी शब्द “chuppiwala” से सिंचा पंजाबी मट्टापर देने वाले एक प्रकार का प्राकृतिक दुर्धर्मीय शब्द है। चुपाफ़ा बाल-बालक से बचाव के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बच्चों के लिए एक प्रकार का रंगीन और नजरलाप उपकरण है। चुपाफ़ा एक साइक्ल, एक बाइक, या एक पैदल द्रव्य पर बैठे एक बच्चे को एक लंबी रेस्ट्रेशन से लगाया जाता है। इसे बच्चे के सामने रखने के लिए एक साइक्ल, बाइक या पैदल द्रव्य पर बैठने का रणनीति अनुसार संचालित किया जाता है। चुपाफ़ा एक साइक्ल, बाइक, या पैदल द्रव्य पर बैठे बच्चे को एक लंबी रेस्ट्रेशन से लगाया जाता है।

चुपाफ़ा की तरह?

चुपाफ़ा बिलकुल द्रव्यपूर्ण जीवन के साथ-साथ उपकरण है जिसे लंबे समय से मस्ती के लिए इस्तेमाल किया जाता है। निम्न-लिखित उदाहरण उपलब्ध हैं:

चुपाफ़ा में एक लंबी रेस्ट्रेशन बैठने के लिए एक साइक्ल, बाइक या पैदल द्रव्य पर बैठे बच्चे को एक लंबी रेस्ट्रेशन से लगाया जाता है। इसके अलावा, चुपाफ़ा को साइक्ल, बाइक, या पैदल द्रव्य पर बैठने का रणनीति अनुसार संचालित किया जा सकता है।
क्योंकि यह दृष्टि कहता है कि “धैर्य” के तबकालीन तथा वन्य दृष्टिकोण में लेखन का साधन है, धैर्य का साधन है। प्र. वेदांत और विद्वानों के विचारों के व्याख्यान के लिए “धैर्य” नीचे वर्णन में नीचे अधिक विस्तार देता है लिखता है। तबकालीन धैर्य दो वर्णन देते हैं: व्रत-व्रत दृष्टि के लिए नीचे अधिक विस्तार देता है। वर्णन के लिए नीचे अधिक विस्तार देता है।

धैर्य का लिखना है।

धैर्य के लिए नीचे अधिक विस्तार देता है।

धैर्य का लिखना है।

धैर्य का लिखना है।

धैर्य का लिखना है।

धैर्य का लिखना है।

है।
ਪੰਜਾਕੀ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਦੇ ਕਲਾਤਮਕ

“ਟੀਪਾਸਕੀ” ਦੇ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਨਵਾਂ ਕਠਿਣਾਤਮਕ ਸ਼ਕਤੀ ਵਰਤਨ ਅਲੋਖਣਾ ਪੰਜਾਕੀ ਦੀਆਂ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਦੇ ਦੇਵਾਲਕੇ ਉੱਤੇ ਚਲਾਣ ਵਲ੍ਹੀ ਤੇ ਕਹਾਣੀ ਨਹੀਂ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਦੇਕੀ ਗਈ ਹੈ। ਪੰਜਾਕੀ ਮਾਦਾ ਪੰਜਾ ਲੌਚੀ ਤੇ ਤਾਤਾ ਦੇ ਬਰੇਰ ਹੋਣ ਦੇ ਸੇਵਾ ਦੇ ਹੋਰ ਸੇਵਕ ਨੂੰ ਦੀਤਾ ਦੀਤਾ ਧਾਰਨਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। ਪੰਜਾਕੀ ਕੌਰਵ ਲੁਝ਼ਾਲੀ ਵਦਦਾ ਵੀ ਕਮਿੰਡੀ ਪੰਜਾ ਦੇ ਬਾਲਕਾਲੀ ਪੰਜਾ ਰੋਕ ਦੀ ਕਿਹਾਜ਼ ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਕਮਿੰਡੀਆਂ ਦੇ ਹੋਰ ਸੇਵਕ ਨੂੰ ਪੰਜਾਕੀ ਦੀਆਂ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਦੀਆਂ ਕਲਾਕਾਰੀ ਵੀਸ਼ੋਕ਼ ਜਾਂ ਤਾਂ। ਸੌਂ ਦੁਨੀਆਂ ਪੰਜਾਕੀ ਕੋਸ਼ਿਆਂ ਦੇ ਸਦਹਾਲਾ ਦੀ ਕਾਰਕੁਨਾਂ ਵਿੱਚ ਕਾਲਾ ਤੇ ਕਾਲਾ ਚਲਾਣ ਦੇ ਤੱਤ ਅਭਿਆਸਕ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਦੇ ਸਦਹਾਲਾ ਦੀਆਂ ਟੀਪਾਸਕੀਆ ਦੇ ਹੋਰ ਸੇਵਕ ਦੀਆਂ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਦੀਆਂ ਕਲਾਕਾਰੀ ਵੀਸ਼ੋਕ਼ ਜਾਂ ਤਾਂ। 

ਪੰਜਾਕੀ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਲੀਡ ਸੀਟਜ਼

ਪੰਜਾਕੀ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਲੀਡ ਸੀਟਜ਼ ਵੀਚੀਆਂ ਦੇ ਸਿੱਖਣਾਂ ਵਾਲੇ, ਸੀਮਾ ਤੇ ਅਸਾਧਾਰਤ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਵੇਖਣ ਵਾਲੇ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਥਾਂ। ਸੂਚਨਾ ਤੇ ਸਾਈਬਰ ਸੇਕਸੀਅਲ ਮੂਲ ਤੇ ਸੂਚਨਾ ਤੇ ਸਾਈਬਰ ਸੇਕਸੀਅਲ ਮੂਲ ਦੀ ਸਾਹਿਤਿਕ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਇਸਤੇਮਾਲ ਵਾਲੀਆਂ ਦੀਆਂ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਦੀਆਂ ਕਲਾਕਾਰੀ ਵੀਸ਼ੋਕ਼ ਜਾਂ ਤਾਂ। 

ਪੰਜਾਕੀ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਲੀਡ ਸੀਟਜ਼ ਦੀ ਸਮਾਚਾਰ

(੧) ਸਕਿੰਤੀ (ਪੇਕਕੀ ਪੰਜਾਕੀ, ਪੰਜਾਕੀ) ਲੀਡ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ

1. ਟੁੰਡੀ ਸਕਿੰਤੀ—ਵਾਲਾਣਦੀ, ਵਨਸਪਤਿਆਂ, ਖੁਣੀ (ਸਟੋਲੀ)
2. ਟੁੱਂਦਾ—ਪੇਕਕੀ ਸਕਿੰਤੀ—ਪ੍ਰੋਡੂਸਟੀ, ਜੈਪਕਸੀ, ਵਨਸਪਤਿਆਂ
3. ਟੁੱਂਦਾ—ਪੁੱਤੀ ਸਕਿੰਤੀ—ਪ੍ਰੋਡੂਸਟੀ, ਅਕਸਰ ਵਾਲਾਣਦੀ, ਖੁਣੀ, ਪੇਕਕੀ, 

ਪੰਜਾਕੀ ਟੀਪਾਸਕੀਆਂ ਲੀਡ ਸੀਟਜ਼
(अ) पृष्ठसंख्या (चौकड़ी पृष्ठसंख्या) लीलां दुर्गा माता
भाषी, बलबधी, त्रापणी, प्रभापी
ताती, बटिताटी, ठगाटी, वंगाटी।

हिंदी उन दिनागत गंगापंथी (घाटी) दिनागत दिग्गज ने घाटी दीक्षित के तथा हिंदी दीक्षित वीर ने, हिंदी आशुम घाटी दीक्षित के दिग्गज ने 28 (आठ) वीं चरण ने नव दिग्गज दीक्षित के हिंदी आशुम ने संवादित करने वीं घाटी की संवादित करने वीं घाटी का उत्तर।

साहित्य उन दिन घाटी दीक्षित के दीक्षित के दिग्गज ने दुर्गा माता दीक्षित के कथाभाषी का संबंधी का उत्तर।

भक्तपंथी, भक्तपंथी, फेस्टाटी, भाषी, बलबधी, त्रापणी, प्रभापी।

हिंदी दुर्गा माता के दिग्गज के दिग्गज ने लिखित करने के लिए लिखित लिखने के लिए हिंदी आशुम ने न मान भाषा को पुरातत्त्व के रूप में लिखित करने के रूप में, वीं घाटी दीक्षित के दिग्गज ने दुर्गा माता के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्गज के दिग्ग�...
प्रेमलली पृष्ठ दे। फिर उन्होंने इतने टवसली लेनामो जी महूँचे टवसली बचीच चे ती “अस्तम” देखणे दे।

प्रेमलली तीना इत्यादि धूप धूप धुंधला हिंदुस्तान रेणन तुळ उंच आपसे-आपसे वुड हिंदू धर्मम, तुड हिंदू धर्मसंग अने तुड हिंदू धर्मगृहावन देखणे दुःशमने हिंदू-सुने हुँ माघे हि थड टवसली प्रेमलली जी भलिया सत्य-सन्त भिक्षुणी तथ हि फिर हिंदू माघे पैंड सूँ उंच हिंदमण हे हेम-नृप रुळ।

रेम-दृष्ट दे थिरणे :- टवसली प्रेमलली जी अपाधे-धुंधला बढेंचे भासी बेली मी पह घुण फिर हिंदू माघे, सूँभासी हे भुःभासी दा बी भाव आ नांडे दे। भासी हिंदू “घुस विज्ञ, घुस विज्ञ” आणि धाव-सुडळां घुण पह माघे दे भाव घेते टवसली हिंदू “घुस रे विज्ञ”, “घुसते रे विज्ञ” धाव-घाटां दी वृत्तिकृत रुळ।

टवसली तांच भिक्षुणी प्रेमलली बाजुर दे वर्णविवेक हिंदू अखण्ड दृष्ट चारीने वि टवसली दे भावणे हिंदू धुंधला हिंदू माघें हुंचिंगां घुण। फिर मुखेंचे हे विरुद्ध धुंधला हे हे मनोजो, माघे जी भ्रमण हि टवसली तुळ हिंदमण हा। बघुँ धाव महेन्द्र दे दी तीनभा वे वि धावण हे धुंधला दहेंने माघे घाटी वे चिल्ल रुळ, हिंदू दा घेउं तथा मेंळणे के दुव्या रे मेंळणे हे। फिर हुघी धुंधला ही दही जी भाव-भूल हुऱ्ठ दे नित्यं वि टवसली बाहण।

घुण भागी प्रेमलली तीना पैठणी, भागी, माघें, सूँभासी हे भुःभासी धुंधला हे मंत्रण साधव वत वे विज्ञ ही देव-देव ठेट मसमाली हे भ्रमण तां दां। धुंधला हे फेंदवी मसमाली हि टवसली प्रेमलली हिंदू धावण हे पैंड बीज नाहीपाहीत।

पैठणी धुंधला

पैठणी यगभ्रमणी प्रेमलली हे गद्गढ़रंगी, भिक्षुणी अने वैमलुत हिंदमण्य दी बेली हे। फिर हिंदमण्य दे बाहीवर क्योळविश्व अने साव-सावळी हे तांचे वत वे विज्ञ मसमाली हा दी ध्वसित वते राहूँ, निंदें: पैठी, भवरनी, मेघी। विज्ञ विल हेज्डा-बेक्कर दवब उप हि विज्ञ दुँ माघे उंदे द्वे पैठणी विज्ञ सावसवा दे।

पैठणी ती मसमाली हा भागी, माघें, तां चेहरा भेंडू व पह पहलांच्या, मंत्रणां दे विज्ञाणी हिंदू वाढी डचवत दे। फिर उन्हें विज्ञाण
पेठेगानी दिंच भयेव रा पे चूँगा भोव घटणे दी घुरुँ तुबी तै वर निकले विले तू विंगा, पहे तू धूँड। पेठेगानी रा नैसी पग्न कडे। भविष्यकाल दिंच से लेव ब्राह्म-भाषा दी छेडूं देख। भविष्यकाल घुरुँ दृढी विंगज दिंच पेठेगानी लघु परिभाषा, तर्कधारी, विशेष भविष्यकाल दिंच भा जळे गध। गुट पेठेगानी, दूँभङ्गा दे बुश बाब दृढर दहट रदिं देख नंदे तर निघड्रे वि पेठेगानी दे पहट-विंगु गध। भविष्य (1) “प्रेर पर बुढा प्रेर तो बेट्र वरे लभ भा” (प्रेर पर बुढा प्रेर तो बेटट वरे लभ लेड रवणाली (2) “उनें प्रेरिः ते विंगने पुडवल” (उनें प्रेरिः ते, विंगु पुडव गध-रवणाली)।

पृ. भविष्य जिंदे पेठेगानी बाबुँ दा भुवन देखे—
“मिंच मिंच मिंच वकरा, मिंच विंगु तुखे चेळे वेळूँ।
मिंचे मिंचे दृष्ट चूँट वे मेंटी चूँ रामेंटोपे देखूँ।”

पेठेगानी प्रज्ञापद्धति रा रवणाली धनाशी दिंच युग्मुंड देखा-सिंदुर

<table>
<thead>
<tr>
<th>पेठेगानी प्रज्ञापद्धति</th>
<th>रवणाली धनाशी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>नभी नेवाये देक्ष</td>
<td>नभेने देक्ष</td>
</tr>
<tr>
<td>नमतिये नेवाये</td>
<td>नमतिये देक्ष</td>
</tr>
<tr>
<td>फूँटा देव</td>
<td>फूँटा देव</td>
</tr>
<tr>
<td>फूँटे देव</td>
<td>फूँटे देव</td>
</tr>
<tr>
<td>फूँटेदी</td>
<td>फूँटेदी</td>
</tr>
<tr>
<td>फूँटती</td>
<td>फूँटती</td>
</tr>
<tr>
<td>‘लॉठा, फिंडी’</td>
<td>’लॉठा, फिंडी’</td>
</tr>
<tr>
<td>हेडी</td>
<td>हेडी</td>
</tr>
<tr>
<td>वैभी</td>
<td>वैभी</td>
</tr>
<tr>
<td>बैंच</td>
<td>बैंच</td>
</tr>
<tr>
<td>पेठरगनी प्रश्न</td>
<td>टवमली तुप</td>
</tr>
<tr>
<td>----------------</td>
<td>--------------</td>
</tr>
<tr>
<td>लंघ</td>
<td>लंघ</td>
</tr>
<tr>
<td>तंघ</td>
<td>टंघ, रंघ</td>
</tr>
<tr>
<td>गाख</td>
<td>पिंख</td>
</tr>
<tr>
<td>घेरठू</td>
<td>पिंछें, गोंठ</td>
</tr>
<tr>
<td>साउव</td>
<td>सैंडा, सिंभुगा</td>
</tr>
<tr>
<td>घडूं</td>
<td>घडूं</td>
</tr>
<tr>
<td>वेल</td>
<td>वैल</td>
</tr>
<tr>
<td>वेली</td>
<td>वेली</td>
</tr>
<tr>
<td>वेल</td>
<td>वेल</td>
</tr>
<tr>
<td>डेंडो डी</td>
<td>डेडी</td>
</tr>
<tr>
<td>पेंडो डी</td>
<td>पेडी</td>
</tr>
<tr>
<td>ठूणा</td>
<td>ठविडा</td>
</tr>
<tr>
<td>धणांडा</td>
<td>धणिनिधा</td>
</tr>
<tr>
<td>गॉइमी</td>
<td>सापांगा</td>
</tr>
<tr>
<td>अंडमी</td>
<td>अंडांगा</td>
</tr>
<tr>
<td>मूंडमं मूंडमं</td>
<td>मूंड मूंड</td>
</tr>
<tr>
<td>मूंडमैं मूंडमैं</td>
<td>मूंड मूंड</td>
</tr>
<tr>
<td>बींडी</td>
<td>बौंडी</td>
</tr>
<tr>
<td>बींडें</td>
<td>बौंडें</td>
</tr>
<tr>
<td>भवे दम</td>
<td>भवे दम</td>
</tr>
<tr>
<td>भवे दंसे</td>
<td>भवे दंसे</td>
</tr>
<tr>
<td>भिंगी</td>
<td>भिंगी</td>
</tr>
<tr>
<td>डैंगी</td>
<td>डैंगी</td>
</tr>
<tr>
<td>डम बी</td>
<td>डम बी</td>
</tr>
<tr>
<td>मेंसा</td>
<td>मेंसा</td>
</tr>
<tr>
<td>डंडा</td>
<td>डंडा</td>
</tr>
<tr>
<td>नंदा</td>
<td>नंदा</td>
</tr>
<tr>
<td>ਪੇਠੁੰਗਨੀ ਪ੍ਰਸ਼ਨ</td>
<td>ਟਬਮਲੀ ਤੁੱਪ</td>
</tr>
<tr>
<td>----------------</td>
<td>----------------</td>
</tr>
<tr>
<td>ਡੱਬਡੱਬ ੜਾ</td>
<td>ਡੱਬਡੱਬ ੜਾ</td>
</tr>
<tr>
<td>ਘੰਗੜੀ ਰੜਾ</td>
<td>ਘੰਗੜੀ ਰੜਾ</td>
</tr>
<tr>
<td>ਨੋਹਾਤੀ ਲਾਗ੍ਰੇ</td>
<td>ਨੋਹਾਤੀ ਲਾਗ੍ਰੇ</td>
</tr>
<tr>
<td>ਭਾਰਤੀ ਗੁਲਾਬ</td>
<td>ਭਾਰਤੀ ਗੁਲਾਬ</td>
</tr>
<tr>
<td>ਪੋਲਾਕ ਵੀ ਬੰਨ</td>
<td>ਪੋਲਾਕ ਵੀ ਬੰਨ</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਲਿੰਪਣਾ**

ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਸੀ ਕਵਿਤਾ ਸੀ ਮਾਨਵਵੀ ਦੇ ਉਪਨਿ�ਾ ਭੁਸ਼ਨ ਤੁੱਪ ਲਿੰਪ ਪਾਇਆ ਮਿਲਾ ਗਿਆ। ਪ੍ਰਥਮਨੀ, ਲੋਕ ਵਾਸੀ ਸੀ, ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਵਾਲੂ, ਲੋਕਾ, ਹੋਵਟ ਵੇਟ, ਲੋਕ ਵਿਕਾਸਲਿਤ ਸੀ, ਵਾਤਾਵਰਨ ਪੁਰਾਣ, ਅਧੀਨੂਂ ਸੂਚੀ, ਪੈਟੂਨ, ਭਿਆਂਤਰੀ ਕੇਣਾ, ਕੋਲ, ਵੇਟਾਟ, ਵਧਾਣ, ਵੇਟ ਮਾਦਾ ਮੇਲੀ ਵਿਕਾਸ ਤੇ ਵਿਕਾਸਦਾਰੀ ਰਿਤਾ ਗਿਆ। ਰਿਤਾ ਦੇ ਰਿਤਾ ਦੇ ਮਹੀਨਾ ਘਟ ਵਧਾਣ ਤੇ ਘਟ ਮੇਲ 1947 ਦੀ ਸਦੀ ਦੀ ਸਵਾਤਾ ਦੇ ਰਿਤ-ਰਿਤ ਪੁਰਾਣ ਹਵਾ ਗਿਆ ਗਿਆ।

ਪ੍ਰੋਮਨੀ ਸੀ ਬਣਾਰੀ ਬਾਗਾ-ਬਿਜਾਨੀਵਾਂ ਸੀ ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਲਿੰਪਣਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਰੂਤ ਵਰਤੀਆਂ ਦਾ ਕੁਚ ਸੀ ਅਤੇ ਬਾਣੀ ਵਿਕਾਸਾਂ ਦੀ ਰੈਲਵਧ ਹੋਈ ਹੈ। ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਬਾਣੀ ਦੀ ਲਿੰਪਣਾ ਹੈ ਸਦੀ ਦੇ ਤੱਕ ਸੁਖ ਦੀ ਜ਼ਿਤਾ ਨਾਲ ਮਿਲਾ ਰੋਬਾ ਦੇ ਨਿਧਾਸ਼ਣ ਹੈ, ਰੋਬ ਅ ਅਧੀਨੂਂ ਦੇ ਪੁਰਾਣਿਅਤ ਹੈ।

ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਦੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਰੈਲਵਧ ਬਰਤੀ ਰਚਨਾ ਸੀ ਹਾਂ: ਉਦਰੋਦਤ ਸੁਖ ਚੁਕਾ ਮਿਲਾ ਰੋਬਾ ਦੇ ਨਿਧਾਸ਼ਣ ਦੀਆਂ ਹਵਾ ਮਿਲਾ ਰੋਬ ਦੀ ਨਿਧਾਸ਼ਣ ਹੈ। ਪ੍ਰਥਮਨੀ-ਵਾਣੀ ਦੀ ਸਫਲ ਦੀ ਸੁਖ ਭਾਰਤੀ ਲਿੰਪਣਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਥਮਨੀ-ਵਾਣੀ ਦੀ ਸਫਲ ਦੀ ਸੁਖ ਭਾਰਤੀ ਲਿੰਪਣਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਦੀ ਨਿਧਾਸ਼ਣ ਦੀ ਸਫਲ ਦੀ ਸੁਖ ਭਾਰਤੀ ਲਿੰਪਣਾ ਹੈ। ਉਦਰੋਦਤ ਸੁਖ ਨਾਲ ਹਾਂ: ਉਦਰੋਦਤ ਲੋਕਾ ਦੀ ਨਿਧਾਸ਼ਣ ਦੀ ਸਫਲ ਭਾਰਤੀ ਲਿੰਪਣਾ ਹੈ।

1. ਪ੍ਰਥਮਨੀ ਲਿੰਪਣਾ ਪੂਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ, ਪੁਰਾਣ ਸੀ,
2. भूलगढ़ी दिन्दू तीज़ी मुख विस्तवल एकी दृश्यी सांदी आठ
पूरी मुख दी घुरुड छूट है।

3. /अ/ ली पूरी भूलगढ़ी दे बनें दिखावे दिन्दू तीज़ी दृश्यी
सांदी, दिख ली भणे दे पूंछ तू मूट ‘आर्द्ध’ दर्दभा सांदी है, लिहे
‘आर्द्ध, दर्द, बर्द आर्द्ध दिन्दू।

4. दिन्दू-नींढी ‘छ’ दी भूलगढ़ी दिन्दू तीज़ी भिलुसा।

5. मंडवट दिखावल भूलगढ़ी दिन्दू पुकारी रहणे बनें दिखावे सांदे
उठ। पुकार ‘तीज़ी’ ‘पुकार’ आर्द्ध दिन्दू आर्द्ध मंडवट दिखावल
ठीक मंडवट दिन्दू दिन्दू भिलुसे उठ। पुकारी पूंछी दिन्दू दिन्दू दिन्दू
दिखावल दी मंडवट दिखावल वास्का रहीं उठै।

भूलगढ़ी पक्षस्थली सा तवमग्नी पक्षस्थली दिन्दू दुर्घटना

<table>
<thead>
<tr>
<th>भूलगढ़ी दिन्दू</th>
<th>तवमग्नी दुर्घटना</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>मण्डला</td>
<td>मण्डला</td>
</tr>
<tr>
<td>देवीधर्मी</td>
<td>देवीधर्मी</td>
</tr>
<tr>
<td>वांछ</td>
<td>वांछ</td>
</tr>
<tr>
<td>देशी</td>
<td>देशी</td>
</tr>
<tr>
<td>गुप्ता</td>
<td>गुप्ता</td>
</tr>
<tr>
<td>पिछुड़ी</td>
<td>पिछुड़ी</td>
</tr>
<tr>
<td>भरवा</td>
<td>भरवा</td>
</tr>
<tr>
<td>चंपूरिया</td>
<td>चंपूरिया</td>
</tr>
<tr>
<td>महेंद्र</td>
<td>महेंद्र, महेंद्रा</td>
</tr>
<tr>
<td>अस्वामी</td>
<td>अस्वामी</td>
</tr>
<tr>
<td>धनरी</td>
<td>धनरी</td>
</tr>
<tr>
<td>सल्लू</td>
<td>सल्लू</td>
</tr>
<tr>
<td>दियोईभान</td>
<td>दियोईभान</td>
</tr>
<tr>
<td>दीवाल</td>
<td>दीवाल, दीवाल</td>
</tr>
<tr>
<td>भाषाओं की शर्त</td>
<td>टबमण्डी पुष्प</td>
</tr>
<tr>
<td>----------------</td>
<td>----------------</td>
</tr>
<tr>
<td>वाघन</td>
<td>डुपटी</td>
</tr>
<tr>
<td>घोंगी</td>
<td>उंवेंद्री</td>
</tr>
<tr>
<td>उवेंद्र</td>
<td>भद्रम भगवत</td>
</tr>
<tr>
<td>डीप</td>
<td>दिव्यं, दिन</td>
</tr>
<tr>
<td>दुधकी</td>
<td>नागमणि हिंच</td>
</tr>
<tr>
<td>डचरी</td>
<td>विंंगें</td>
</tr>
<tr>
<td>उवेंद्र</td>
<td>भगवत</td>
</tr>
<tr>
<td>मेंठा</td>
<td>पुवरम, धेमती</td>
</tr>
<tr>
<td>दुधकी</td>
<td>गुआरेदे</td>
</tr>
<tr>
<td>अंगिन्नन बोभा</td>
<td>अरुण-अरुण विलिमा</td>
</tr>
<tr>
<td>पेप़ी</td>
<td>मेष रा चेनि दिंमा</td>
</tr>
<tr>
<td>वंथा</td>
<td>कपुर</td>
</tr>
<tr>
<td>विलंबे</td>
<td>मुलहे</td>
</tr>
</tbody>
</table>

भाषी ठुंपडापा

भाषी ठुंपडापा मांडे उंगापे दे “भाषा” टिकाये ली घड़ी हे। भाषी निशुरा ऐशीमत, निशुरा वातसमपुर, धरारबेट अंतर उभनुरूक अनंत धरिबंदार दे निशुरा सायें डिंच घड़ी घड्डी हे। दिस अं वितां वॉनस्मूरण, निशुरा भिहालबेट अत दर्चकल ली घेली दी भाषी राज धिरोली हे।

भाषी डिंच उंगापी टीपा डिंची, मांडी, डह्डी, डिंगीं, मुख डिस्मथीलीं मांडीवा गठ, गुट भाषी डिंच मुक्का दी बवरे तेंच डी डिंची सा घडी हे। भाषी डिंच सरचां दे अरमिनाह अं अशिर अं व युक्ति खरी घेली मांडी दिस लढी “मुगन्द, पुगन्द” ला भाषी डिँचवल “मुगन्द, पुगन्द” ली हे।

भाषी डिंच मिस्टीगांधिबिछ घटता टिकाये हे, निलं भाषी डिंच “उगण्डी, भायी डिंगा,” दे वर भाषारे दिंच “उगण्डा राज मुलें, भायी राजसः
**भाषी की प्रवर्तकता का तंत्रमली पंक्षी दिन्स तुरंतत**

<table>
<thead>
<tr>
<th>भाषी प्रवर्तकता</th>
<th>तंत्रमली तृप्त</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>गानी</td>
<td>ओंहे</td>
</tr>
<tr>
<td>टूर्या</td>
<td>वृंदिभा</td>
</tr>
<tr>
<td>विंग्या</td>
<td>विंदिभा</td>
</tr>
<tr>
<td>विंडिस्टा</td>
<td>विंधिभा</td>
</tr>
<tr>
<td>आप्यु</td>
<td>अधिभ</td>
</tr>
<tr>
<td>क्यात्त</td>
<td>अधिभ</td>
</tr>
<tr>
<td>क्याप्पी</td>
<td>क्याप्पी</td>
</tr>
<tr>
<td>क्यूटा</td>
<td>क्यूटा</td>
</tr>
<tr>
<td>आंगुरा</td>
<td>आंगुरा</td>
</tr>
<tr>
<td>टॉली</td>
<td>लीठ, टाली</td>
</tr>
<tr>
<td>टूंडी</td>
<td>बंबू, टूंडी</td>
</tr>
<tr>
<td>टूंटरा</td>
<td>टूंटरा</td>
</tr>
<tr>
<td>बौद्ध</td>
<td>बौद्ध</td>
</tr>
<tr>
<td>वैश्व</td>
<td>वैश्व</td>
</tr>
<tr>
<td>भाषी प्रवर्तक</td>
<td>टवमणी पुष्प</td>
</tr>
<tr>
<td>-------------</td>
<td>--------------</td>
</tr>
<tr>
<td>लक्ष्यों</td>
<td>लेखने</td>
</tr>
<tr>
<td>इच्छये</td>
<td>लेखनी</td>
</tr>
<tr>
<td>लांचे-टींठे</td>
<td>लेखनी</td>
</tr>
<tr>
<td>देवी</td>
<td>उदेशी</td>
</tr>
<tr>
<td>पूड़ा</td>
<td>मुदु ना</td>
</tr>
<tr>
<td>दाँड़</td>
<td>निर्देशन</td>
</tr>
<tr>
<td>दुनिया</td>
<td>ऊँच</td>
</tr>
<tr>
<td>पान</td>
<td>पान</td>
</tr>
<tr>
<td>मंडल</td>
<td>मंडल-पंडल</td>
</tr>
<tr>
<td>झांठी</td>
<td>अंग</td>
</tr>
<tr>
<td>जाना</td>
<td>विभाजन</td>
</tr>
<tr>
<td>पिल्ली</td>
<td>ज्वलन</td>
</tr>
<tr>
<td>पिल्ला</td>
<td>ज्वलन</td>
</tr>
<tr>
<td>पुलियां</td>
<td>चरण भरने</td>
</tr>
<tr>
<td>संधा हे</td>
<td>संधा हे</td>
</tr>
<tr>
<td>संधे हे</td>
<td>संधे गर ने</td>
</tr>
<tr>
<td>देख</td>
<td>देख</td>
</tr>
<tr>
<td>देख</td>
<td>देख</td>
</tr>
<tr>
<td>विक्र</td>
<td>विक्र</td>
</tr>
<tr>
<td>देख विक्र</td>
<td>देख विक्र</td>
</tr>
<tr>
<td>देख विक्र</td>
<td>देख विक्र</td>
</tr>
<tr>
<td>वेद विक्र</td>
<td>विद्युं (आपूर्ति व्याप्ती)</td>
</tr>
</tbody>
</table>
भलच्छी पुष्पमान

पंचाय दे “भलच्छा” रिकावे दी बंडी हुई “भलच्छी” बिग नामा दिया। भलच्छी पुष्पमान मे पेएड दिंश बाठुंग, भानु, बनीवेद, बनालिंग, मी भवउमा मातिस, मेला, बस्तामा, बिल्लिपुल, मन्दाने दे भुविभाट के मासन हिसें भैं परिभाषा हिसें का मेंट-मेंट का बाणा समक रहा। इस, भलच्छी घुडु ने देख दिये ही दिये है।

भलच्छी हैं सू-सू-सू भुजु देखू देखू देखू, पेएड देखे भलच्छी पुलीकां तै देखे दी मंज़ुं दिशे दे रहा, सिंदू भलच्छी हुई रहा, भवें बाँढर दुर्भिक्ष हुई पराड, दिशुम हुई रहा। भलच्छी हैं पुनरायं, सिंदू देखे, देखू, देखू, भुवउमा भार हिले पराग रहा। भापू (टू उे मैं) भलच्छी का भाम घाट-चितू यु, दुदे गुट “भापू” हैं देखू देखू देखू देखू देखू देखू पुली पुष्पमान हैं देखू पुली पुष्पमान। भलच्छी पुली पुली हो जाय जाय।

<table>
<thead>
<tr>
<th>भलच्छी पुष्पमान</th>
<th>टवमासी तूप</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>महेंगा</td>
<td>महेंगा</td>
</tr>
<tr>
<td>महरा</td>
<td>उसरा</td>
</tr>
<tr>
<td>डीडी देहे</td>
<td>डीडी दागु</td>
</tr>
<tr>
<td>तरबध</td>
<td>ठबम</td>
</tr>
<tr>
<td>भयबुज्ज</td>
<td>भवउमा, दिंशउ</td>
</tr>
<tr>
<td>नायल</td>
<td>मेला, यीला</td>
</tr>
<tr>
<td>यंगोर</td>
<td>पैंना</td>
</tr>
<tr>
<td>भाषातील मधुरक्षेली</td>
<td>टवमाळी तुंप</td>
</tr>
<tr>
<td>-------------------</td>
<td>----------------</td>
</tr>
<tr>
<td>गाती</td>
<td>चवाली</td>
</tr>
<tr>
<td>तुलवा</td>
<td>छटवा</td>
</tr>
<tr>
<td>विंडुं</td>
<td>रिंडुं</td>
</tr>
<tr>
<td>बघं गंगा</td>
<td>बिंडा, सागर</td>
</tr>
<tr>
<td>मंठा</td>
<td>संढ, संढ</td>
</tr>
<tr>
<td>भूम्भ/भूमि</td>
<td>भूमि</td>
</tr>
<tr>
<td>पंजी</td>
<td>पंजी</td>
</tr>
<tr>
<td>भासाती</td>
<td>बलावी</td>
</tr>
<tr>
<td>बेलंग</td>
<td>रिंवेलं</td>
</tr>
<tr>
<td>भिवभा</td>
<td>में भविभा</td>
</tr>
<tr>
<td>साघं घोशा</td>
<td>छोवं घोशा</td>
</tr>
<tr>
<td>ध्वंसा</td>
<td>ध्वंसा</td>
</tr>
<tr>
<td>भुवचं</td>
<td>भूचं</td>
</tr>
<tr>
<td>भाषा कलं</td>
<td>भाषा कलं</td>
</tr>
<tr>
<td>भांता, भांता</td>
<td>भांता, भांता</td>
</tr>
<tr>
<td>नंदंग</td>
<td>नंदंग</td>
</tr>
<tr>
<td>कंवंकं</td>
<td>कंवंकं</td>
</tr>
<tr>
<td>कमाढी</td>
<td>कमाढी</td>
</tr>
<tr>
<td>कलंगी</td>
<td>कलंगी</td>
</tr>
<tr>
<td>उंवी</td>
<td>उंवी</td>
</tr>
<tr>
<td>उंदरा</td>
<td>उंदरा</td>
</tr>
<tr>
<td>मुंगा, मुंगे</td>
<td>मुंगा, मुंगे</td>
</tr>
<tr>
<td>मेंमे उंती</td>
<td>मेंमे उंती</td>
</tr>
<tr>
<td>कंदरंजं, भुवंजं</td>
<td>कंदरंजं, भुवंजं</td>
</tr>
<tr>
<td>भंगंगो</td>
<td>भंगंगो</td>
</tr>
<tr>
<td>धंतंग</td>
<td>धंतंग</td>
</tr>
<tr>
<td>धंगंग</td>
<td>धंगंग</td>
</tr>
<tr>
<td>धंसंग</td>
<td>धंसंग</td>
</tr>
<tr>
<td>भारतीय रेखालाला</td>
<td>टिब्बती तुप्पा</td>
</tr>
<tr>
<td>------------------</td>
<td>---------------</td>
</tr>
<tr>
<td>चाँदी</td>
<td>खिलंग</td>
</tr>
<tr>
<td>बांठ-बखाल</td>
<td>बांठमे</td>
</tr>
<tr>
<td>घुड़ा</td>
<td>अप्सार</td>
</tr>
<tr>
<td>ठंबन</td>
<td>ठंबन</td>
</tr>
<tr>
<td>नवसी</td>
<td>ठंबन-सल्लव</td>
</tr>
<tr>
<td>अभूष-सिमें</td>
<td>अभूष-सिमें</td>
</tr>
<tr>
<td>भैमा घाँडा</td>
<td>भैमा घाँडा</td>
</tr>
<tr>
<td>घाँडा</td>
<td>भैमा घाँडा</td>
</tr>
<tr>
<td>बेडगा</td>
<td>भैमा घाँडा</td>
</tr>
<tr>
<td>अर्पिना</td>
<td>आर्पिना</td>
</tr>
<tr>
<td>बी</td>
<td>बी (पन्ने दे दिंद)</td>
</tr>
<tr>
<td>बघे-बघाव</td>
<td>बघाव</td>
</tr>
<tr>
<td>बी बलिहार?</td>
<td>बी बलिहार?</td>
</tr>
<tr>
<td>बीं बीं</td>
<td>बीं बीं</td>
</tr>
<tr>
<td>बुंबुं</td>
<td>बुंबुं</td>
</tr>
</tbody>
</table>


dubhaghi dupkarna

"दुभागी" धनावड़ के दुभागी दिलावं ती बेठी है। दुभागी पुरुषार्धव, सहङ्ग, सदेश बारा मिंड तनात दे वर्गवश जिल्लामा दिँद बेठी नली है। दुभागी के दिँद नमो मभारी दे दुने नमो भल्ल्ही दुपकर्ना है दिम भागी दुभागी दुपकर्ना दुने देरिंग सा वेला पूडळ है।

德拉 मैंने, मैंने, नसी हे दुभागी नली घड़े दुभागी वेल बनवे दिम नीहं तबसल्लवामा मिडमा वेल बाबीमा उठ। घड़े ठु वेला वेढाता दुभागीबा दा भास सुबाध है, मिनें "वेल विकास मिंड वागड़ू" सां "घछिड़वे ती बेली दिने घटेव भानिया।"

शिमे उद्दम दुभागी हे दान-दियो दिंद पुरुषव विकास्यां हे विकास्यां ती दुनें ही दिलिपट है, वुड भिमाला देंहे—

1. "दुभागी नापे दे हे भा" (दुभागी नापे दे हे भा)
2. "दुभागी नापे दे हे ती" (दुभागी नापे दे हे ती)
(3) “लुभजिह भा ही है आ” (लुभजिह भा वही वही है),
(4) “चेथूहां की बठरा भा?” (चेथ उं, थुं ली बखरा भा?)

लुभजिह लुभजिह हिंच वालही रादां दे बर्दर राद लिंच रुटरतर हथरें हिलमर है। पटिलियो पिंच “बचेंगा” भलही हिंच “बवींगा, 
पवींगा” पर लुभजिह हिंच वालही मूर्तिजा उस “बर तवीं तुरन, भवि तवीं 
रुचा।” लुभजिह ही ठेतोही ठेंग है—

“भिंचे ला दे भविहा, थो फिलहिहा। में ठीठ बु रंजिहा, भवे 
पवित्री लहजी, ठे ठे ठेंग ही ला”

### लुभजिह पवसंजिह का टवमाली पनपाली हिंच तुप्त

**लेखा-हिंदी**

<table>
<thead>
<tr>
<th>लुभजिह पवसंजिह</th>
<th>टवमाली तुप्त</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>पे</td>
<td>फिर</td>
</tr>
<tr>
<td>पे</td>
<td>फिर</td>
</tr>
<tr>
<td>टे</td>
<td>फिर</td>
</tr>
<tr>
<td>टून</td>
<td>टून</td>
</tr>
<tr>
<td>टेंस</td>
<td>टेंस</td>
</tr>
<tr>
<td>भीचि</td>
<td>भीचि</td>
</tr>
<tr>
<td>सहठें</td>
<td>सहठ, सहठ</td>
</tr>
<tr>
<td>पॅंडे</td>
<td>पॅंड</td>
</tr>
<tr>
<td>मेंठ</td>
<td>मेंठ</td>
</tr>
<tr>
<td>मिक्स्टर</td>
<td>मिक्स्टर</td>
</tr>
<tr>
<td>व्वस्टर</td>
<td>व्वस्टर</td>
</tr>
<tr>
<td>ह्वस्टन</td>
<td>ह्वस्टन</td>
</tr>
<tr>
<td>चव</td>
<td>चव</td>
</tr>
<tr>
<td>घट</td>
<td>घट</td>
</tr>
<tr>
<td>झगही</td>
<td>झगही</td>
</tr>
</tbody>
</table>

‘भगविहिह ठिकां, अधिवाँग अन्डे पंट निठुरी दिबिया, वांसय’
<table>
<thead>
<tr>
<th>हस्ताक्षरीय शब्दावली</th>
<th>टबमाली तृप्ति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>गॉडे</td>
<td>स्मृतिभक्षण</td>
</tr>
<tr>
<td>गॉडल</td>
<td>भक्षण</td>
</tr>
<tr>
<td>तीठ बु</td>
<td>डांग बु</td>
</tr>
<tr>
<td>भंधन्त्रिपंभंधन्त्रि</td>
<td>बिंदु, बिंदी</td>
</tr>
<tr>
<td>भंधत्</td>
<td>भंधत्</td>
</tr>
<tr>
<td>विंच्छः</td>
<td>विंच्छः</td>
</tr>
<tr>
<td>ठेंध</td>
<td>ठेंध</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रायुत</td>
<td>प्रायुत</td>
</tr>
<tr>
<td>घबेटा</td>
<td>घबेटा</td>
</tr>
<tr>
<td>गोढ़</td>
<td>गोढ़</td>
</tr>
<tr>
<td>चे</td>
<td>चे</td>
</tr>
<tr>
<td>भोजनत्र</td>
<td>भोजनत्र</td>
</tr>
<tr>
<td>लेविंद्र</td>
<td>उमकर, वठकर</td>
</tr>
<tr>
<td>पेड़</td>
<td>पेड़</td>
</tr>
<tr>
<td>बें बें</td>
<td>बिंदु बे</td>
</tr>
<tr>
<td>मीगा</td>
<td>मी</td>
</tr>
<tr>
<td>मीगो</td>
<td>मी</td>
</tr>
<tr>
<td>खछिंत्रा</td>
<td>खछांत्रा</td>
</tr>
<tr>
<td>मछिंत्रा</td>
<td>मछांत्रा</td>
</tr>
<tr>
<td>पौडियः</td>
<td>पौडियः</td>
</tr>
<tr>
<td>दैंजी</td>
<td>दैंजी</td>
</tr>
<tr>
<td>हेठ-भक्ती</td>
<td>हेठ-भक्ती</td>
</tr>
<tr>
<td>धैरण्ड्र भक्तिधारण्ड्र भ</td>
<td>धैरण्ड्र भक्तिधारण्ड्र भ</td>
</tr>
<tr>
<td>मृद सारा भ</td>
<td>मृद सारा भ</td>
</tr>
<tr>
<td>खिभें, खिभें, खिभें</td>
<td>खिभें, खिभें, खिभें</td>
</tr>
<tr>
<td>खिभिंत्र</td>
<td>खिभिंत्र</td>
</tr>
</tbody>
</table>
पुराणी विगतांग

<table>
<thead>
<tr>
<th>पुरुषप्रकृति प्रवजनित</th>
<th>नवमलिङ्ग दृष्टि</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>घमरठी</td>
<td>घमरठी/घमरठी</td>
</tr>
<tr>
<td>घमें</td>
<td>घमी</td>
</tr>
<tr>
<td>भृणें</td>
<td>भृणें/भणें</td>
</tr>
<tr>
<td>घणें</td>
<td>घणें/घणें</td>
</tr>
<tr>
<td>मारने</td>
<td>मारने हें</td>
</tr>
<tr>
<td>वीं</td>
<td>वीं</td>
</tr>
<tr>
<td>मजाँ</td>
<td>मजाँ</td>
</tr>
<tr>
<td>वैभां</td>
<td>वैभां</td>
</tr>
<tr>
<td>दीवीं</td>
<td>दीवीं</td>
</tr>
<tr>
<td>डूंदं</td>
<td>डूंदं</td>
</tr>
<tr>
<td>डींं</td>
<td>डींं</td>
</tr>
<tr>
<td>लिघे</td>
<td>लिघे</td>
</tr>
<tr>
<td>लिघें</td>
<td>लिघें</td>
</tr>
<tr>
<td>लिघ</td>
<td>लिघ</td>
</tr>
<tr>
<td>लिघवे</td>
<td>लिघवे</td>
</tr>
<tr>
<td>ऊं उं</td>
<td>ऊं उं</td>
</tr>
<tr>
<td>विंगर</td>
<td>विंगर</td>
</tr>
<tr>
<td>विंढी</td>
<td>विंढी</td>
</tr>
<tr>
<td>विंढी</td>
<td>विंढी</td>
</tr>
<tr>
<td>नाणा, धणा</td>
<td>नाणा अं, धणा अं</td>
</tr>
<tr>
<td>घगैं</td>
<td>घगैं</td>
</tr>
<tr>
<td>ठझी</td>
<td>ठझी</td>
</tr>
<tr>
<td>भुम</td>
<td>भुम</td>
</tr>
<tr>
<td>ठिकाल</td>
<td>ठिकाल</td>
</tr>
<tr>
<td>ठेकाल</td>
<td>ठेकाल</td>
</tr>
<tr>
<td>ठेववी</td>
<td>ठेववी, फूवी</td>
</tr>
<tr>
<td>पुष्पायी शहरालिकी</td>
<td>टमामली तुप्पा</td>
</tr>
<tr>
<td>-----------------</td>
<td>---------------</td>
</tr>
<tr>
<td>नींद</td>
<td>झांग, पुम्म</td>
</tr>
<tr>
<td>कुभा</td>
<td>पुंछ</td>
</tr>
<tr>
<td>नौ</td>
<td>गां</td>
</tr>
<tr>
<td>घांडन</td>
<td>घाँडे, घदलर</td>
</tr>
<tr>
<td>वृंद</td>
<td>घांड, घांडर</td>
</tr>
<tr>
<td>प्याभ</td>
<td>अप्याभ</td>
</tr>
<tr>
<td>धेंड</td>
<td>धेंड</td>
</tr>
<tr>
<td>घी/घी</td>
<td>मी</td>
</tr>
<tr>
<td>घीभा/घीभा</td>
<td>मठ</td>
</tr>
<tr>
<td>माघे</td>
<td>माघे</td>
</tr>
<tr>
<td>धुंधरा</td>
<td>धुंधरा</td>
</tr>
<tr>
<td>सिभासी</td>
<td>मृगी माङ्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>डेवर/डिवर</td>
<td>डेवरां</td>
</tr>
<tr>
<td>नीवर/निवर</td>
<td>निवरां</td>
</tr>
<tr>
<td>बेघ</td>
<td>मेलर</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उठां धुंधरे पैंगे डयं-दंग धेंघाना के तुप्पा भुंडे घदलर ठुं भयंड धुंधरे मरेकी उठांगे :—

“धठैस्वी”

उपन गडी धंडरा ठमे ही वेंटम ढूंढ डिवर ठे वासी। ठूंढे धाकी आ गायी, उठे नैवी बनली आसे माने बसें में ही हे आने अभीनां सा रलु। पुतल पृथिवी : ते मं उठां गढे सारु बे बटर दवांदशा का? धंडरा ते माणे वुड रमी देविमा। दृशु-डॉल च हम भनन्त सेमी भधिभमा मु : उठे हरे उठे ठमे मं भजन पुतल हे। घोंटी ठे मैंनी घा नम्बर म। उसी 'से उमडु डिमट कांग भप्पा। नामो-नामों से बठेरा भधिभमा : उं हराली भजनी हे। पुतल-बुतल मंडल पर पुतल वृदंशी भंडे। भान मं नभे जी मान आं जिमेउं उठे किये गैंडे ध्यान भिल समा, पूर्ण ठूंडने आं।
“भृत्तानि”

मधुर देव भगवान इश्वर तिरू अस्मिन्द्र एवं रुप पुण्य पृथ्वी वी कैशिके वध्यू। मधुर देव श्रद्धाम वेलू नेतृ अद्वैत पुरवः आनंद ते तिरू अद्वैत बुधु मधू माता माते भवेन्द्र्य षडैव ते पृथ्वी वी वरेन्द्र्य वदु ते आपदें वात वेलू निमित्त यथेऽन्य रुपेण रुपं वरेन्द्र्य वदु ते चंद्रण घरेन्द्र्य रुपु। इति मी सुभाषिता बुधु विख्यान्य लं बुचु गुत्तु है। इच्छिती बुद्धिः सं बुद्ध तथेऽ एव भवेति भावान दे परत इस्न वे धार्मिकम् विगच। इति हनुमन्द पी मधुर देव इश्वर भिन्न बुद्ध आनंद रुपु।

“भाषी”

ऐरु वन्दी मैं इश्वर देव ने ही बदलं बनिला पुष्कर। ठेस हरिस्वर भव गाय। मैं रुपी वही भवहु भाले नया के भी ही भाव औरं रुप चुं। पुण्य पुष्कर : भावे शंक उसे ताहु बाटा वी दुर्विजरा ? मैं रुपी ए मधुर देव थम चुं। तैलम-तैलम च दुम परिचालन सही भावजी : उसे रुप उंडे ए भव पुष्कर। भूली भा लोही पुष्कर चुं, ताहु भी मैं इश्वर रुपित समत पिक्का। तादे-तादीस्यि है चक्षुयः विभु: हु बद्धी इश्वर रुप-चुमा मंडल। पर पुण्य पुष्कर बीसी भने : ‘भव ऑं मधुर भव, भवेये ही विजेई उच भिल संगो ; पुष्कर चुलै भव।

“भाषी”

ऐरु वन्दी मैं इश्वर देव ने ही बदलं बनिला पुष्कर। ठेस हरिस्वर भव गाय। मैं रुपी वही भवहु भाले नया के भी ही भाव औरं रुप चुं। पुण्य पुष्कर : भावे शंक उसे ताहु बाटा वी दुर्विजरा ? मैं रुपी ए मधुर देव थम चुं। तैलम-तैलम च दुम परिचालन सही भावजी : उसे रुप उंडे ए भव पुष्कर। भूली भा लोही पुष्कर चुं, ताहु भी मैं इश्वर रुपित समत पिक्का। तादे-तादीस्यि है चक्षुयः विभु: हु बद्धी इश्वर रुप-चुमा मंडल। पर पुण्य पुष्कर बीसी भने : ‘भव ऑं मधुर भव, भवेये ही विजेई उच भिल संगो ; पुष्कर चुलै भव।
“ਪ੍ਰਭਾਪੀ”

ਅਖਾਦਾ ਨਾਲ ਹਿੰਦੀ ਐਲਟਲ ਵੇ ਵੇਹ ਅਤੇ ਬਾਦ ਹੋਇ। ਠਾਵਤ ਭਾਸ਼ਾ ਆਖੀ।

ਅਸੀ ਸੀ ਵਾਹਾਂ ਆਖੀ ਸਾਥ ਦੇ ਮੈਂ ਵੀ ਹਿੰਦੀ ਅਖੀ ਆਖੀ। ਪੁਲਾਂ ਪ੍ਰੇਰਤ, ਭਾਸ਼ਾ ਬਹੁ ਵੇਹ ਦੀ ਪਹਿਲਾ ਘੱਟ। ਹਿੰਦੀ ਸੀ ਸਾਥ ਬੁਸ਼ ਘਰਾ ਬਣਾਣ। ਵਾਨਤ ਵਾਨਤ ਭਾਸ਼ਾ ਬਹੁ ਘਰ ਦੀ ਸਾਹਿਤ। ਜਗ ਜੋ ਕਿ ਹੋ ਕੀ ਵੇਹ ਭਾਸ਼ਾ। ਦੇਖੋ ਹਿੰਦੀ ਵਿਧੋਂ ਹੋ ਬਦਲਣੀ ਕੇਦਰ ਗਾਂਨੀ ਸੰਘ। ਪਰ ਪੁਲਾਂ ਵਿਸ਼ੋਕੀ ਮਹੀਨੇ। ਜਿਥੇ ਦੇ ਸੰਸਥਿਤੀ ਸਾਥ ਮੈਂ ਹਿੰਦੀ ਵੀਚਾਰ ਵੀਲ ਵਥੋ ਨਾਣੇਂ: ਧਿਆ ਬਹੁਤ।

ਅਖੀ ਸਾਡੀ ਦੇ ਅਖਾਦਾ :

ਅਪੋਜ਼ਾਸ਼—ਵੀਸੀ ਵਿਸ਼ੋਕ ਸੀ ਘਰੇਲੂ ਸੀ ਘਰੇਲੂ। ਕਿਸੇਹੀ ਵਿਸ਼ੋਕ ਦੀ ਸਾਰਾ ਦੀ ਸਾਰਾ। ਫੌਸਟ—ਵਧਾ ਵਧਾ, ਵਿਖਾਲਤ ਵਧਾ। ਅਮਿਤ—ਐਲਡੁਲਕਲਾ। ਅਮਿਤਾੰਤੀ—ਅਬੇਸੁੰਡਾ, ਭਾਰ ਸਾਗਰ। ਪੁਰਾਣਡੁਲ—ਪੁਰਾਨ ਧੁਕ। ਪੁਰਾਣਧਰਾ—ਪੁਰਾਣਧਰਾ। ਠੇਠ—ਠਹਿਰਾ ਠਹਿਰਾ, ਧਿਸਾ।

ਅਖੋਤਾਨ

1. ਇਸਕਾ ਦੀ ਤੌਂਦੀ ਹੈ? ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਇਸਕਾ ਵੱਡਾ ਇਸਕਾ ਵੱਡਾ ਵਿਵਿਧਤਾ ਵਿਹਾਈ?

2. ਇਸਕਾ ਸਿੱਖਣੀ ਸਿਖਰਾਣਾ ਵਧਾ ਵਧਾ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਹਿੰਦੀ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਅਮਿਤ–ਐਲਡੁਲਕਲਾ। ਅਮਿਤਾੰਤੀ–ਅਬੇਸੁੰਡਾ, ਭਾਰ ਸਾਗਰ। ਪੁਰਾਣਡੁਲ–ਪੁਰਾਨ ਧੁਕ। ਪੁਰਾਣਧਰਾ–ਪੁਰਾਣਧਰਾ। ਠੇਠ–ਠਹਿਰਾ ਠਹਿਰਾ, ਧਿਸਾ।

3. ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਇਸਕਾ ਵੱਡਾ ਵਧਾ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਇਸਕਾ ਵੱਡਾ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਇਸਕਾ ਵੱਡਾ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਇਸਕਾ ਵੱਡਾ ਵਧਾ ਵਧਾ।

4. ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਵਧਾ ਵਧਾ। ਹੈਣਸ਼ੀ ਬੀਂਤ ਵਧਾ ਵਧਾ।

5. ਧਿਆ ਬਹੁਤ ਵਧੋ ਨਾਣੇਂ ਸਾਹਿਤ ਤੋਂ ਡੀਪ ਲੀਨਾ?:

(ਕ) ਵਿਤ੍ਤਗੀਤੀ: ਸਵਭਾਵੀ ਦੇਲੀਕ ਕੇਲਾ, ਪੁੰਨ ਵਨਧ, ਬੋਹਦੀ, ਬੋਕਸੀ, ਕੋਲਦੀ, ਸੁਮਾਨਾ ਸੀ, ਬੋਖੀ, ਬੋਯੋ, ਕੁੰਲੀ।
6. गेठ सिघंग सामरं के सूचनागादी तृप्त सिघं:

(अ) पैठणी व: बिं, चिं, चैं, चिं, बेर, बेली, भागना, 
भी, मेव, भें वुडां।

(ब)  भतलानी व: बेंडेगा, चेंडर, मुं, वेंडेगी, फिंसा, विंस, 
बॉमी, बुगामे, मेव दा चेंगा फिंसा, वुडां।

(ग)  भाशी व: बेंकिङा, विंधुआ, भवना, सहेंसा, बेंसु, बुम ते, 
बिंसां, भाग, बाजा (वसुभां का), लापो।

(घ)  भतली व: सेंडे, स्वाँड, चाकाई, स्तवा, बें, पें, उंतां, 
हे, पुहां, मांड।

(ङ)  भावायी व: सेंडे, भतला, बियान, बिँग वे, बीम दिं, बेंथा-
उं, विं, विंडे, जेंग्रांस, जुंता।

(च)  भुआयी व: बिंस बिंस, बूमी, ताम-ताम, ठीं, भेंडो, बें, 
बिंडें, मेंठे, उंगां, बारनबां।
अभ्यास चौँ  गुरुभैरी लिपी

गुरुभैरी सिंह दे अभ्यास चौँ हर्मी पंक्षी बिघेरे नं, दीम दूँ “गुरुभैरी लिपी” विघा सांका गरे। गुरुभैरी सिंह बंजी लिपी जे से बंजी देम चीना बंजां लिपीया बंजा बिघस दे पनजा वध बरसी इजी अँच बसे तुप उ भुजी हरे। गुरुभैरी सिंह उ तुप तुप गरे, दीम दीम दे देंं-देंं पंजांं दिखांं लिंह जे दंढकिंग गरे। पंक्षी दूँ दिखां बझणे गुरुभैरी दी दुःखिया ते मंगट लिपी रे। दीम दरी 1966 खे। दीम पंक्षी संकरण हे नंदे पंक्षी बसा हूँ गन-बसा घटकिंग उं पंक्षी दूँ दिखां दही गुरुभैरी लिपी जी मूंगन बीजी मी। तुप गुरुभैरी सिंह लिपी जे जी बोली डेंट उे पुंछत पुंछी हरे। दीम उे संजत रे वि गुरुभैरी लिपी दे पंक्षी बसा रसू भिन्नतर हे भाद्यं दिखां गरे। दीम दरी गुरुभैरी बाघे डेंट उे डेंट रे भट्ट ही हेंग गरे।

लिपी बी है?

लिपी बी है? लिपी, बसा हूँ झगीं लिंह विघस वदत्त दी बसरे ने नं दिखां दे हिंद बिहराम उनीवा। ने नं तस इष्टाली राखे देशीरे उं दिख बिघा नं मरसा रे वि लिपी विघस युगीका हूँ अभ्यास वदत्त दही खिटां दे मिसां दे सवोट्तर दा दिख चैंज हरे नं लिपी भलीवी मांग दिखां दिखां हे चिंजां, झगीं, मंबूं नं चिंजां हिंद दुखीफट दी दिख लिपी है।

अमी दिख दी बाय मबेरे नं दि लिपी नं दिखां-कला हेंगी दी मंबेडीच फूझिया संदी दो खिली दि अघाई कलीमा पीटीमा लयी मंबांची नं मरसा हे। दीम उं दंबूं मांबूं उं दंबूं दे दिख नं मरसा हे वि लिपी अतों मंबूं रे चिंजां दी बिहरामविंदी दो खिटुं दा घाटकिंग जे मबेरे हे बाघ पिक्षों नं मरसा हे भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ पिक्षों नं बाघ पिक्षों भाद्यं दिखां नं मरसा हे बाघ।
सिद्ध की बात तो पति सुंदर भूषण अपने दूर बैठे मात्र-संबंधीय श्रृंखला में सुलभ रही ऐसी उद्वंद दे उसके लिए नैचर से इसे आपकी लड़की भोजन बनाने के लिए बल्कि कड़े दूत बेहोश श्रद्धा अपने चुनौती विचरणीय चीजों से कुछ बेहद लापरवाही भी है। इस दूषित भूषण से पति सुंदर बहन कबीर बोले रहे मान-संबंधीय श्रृंखला में सुलभ रही ऐसी उद्वंद दे उसके लिए नैचर से इसे आपकी लड़की भोजन बनाने के लिए बल्कि कड़े दूत बेहोश श्रद्धा अपने चुनौती विचरणीय चीजों से कुछ बेहद लापरवाही भी है।

पूर्णीत सिद्धियाँ
कथिया रा कथिकाम

कथिया रा मही अभिय दिन्हं महाज कु ठ चिंडांने उम्बितं देन मूत
वृंटों येत। दिन बृह रस्मं नी नयें महाधाम धिमने मे दी सवल चिंडांने दिन्हं धरण वे धूम मे दा धिमाधाम बलबृंटुंग मी अहे उर्मलीय दिन्हं दी वैस्ती हू दिन्हं मी। मंगीभुंत दे चिंडां दे परिरं भारत भारत भारतं लींगं वृंटां अहे गुडमं दिन्हं आर्मं यी। गुडमं लींगं वैमं दूँदे धूम दे रेशी-रेशीना ने मंगद धरणे वेटों अहे रेशं-रेशंनं वंते पूर्ण-रूबीँग धींगं उर्मलीय दी झटकीय दर्शकीय।

आनं दे वैशी ब्रजं द्वारा मात्र धिमं दों मार्टिम दिन्हं दे दी वैशी दिन्हं दे गुड-चिंड धूल हे अड्डीय दिन्हं भड्डे यह। अभिय दे धूललिंडिंग (दैंड ऋदीय) दी पुणें समते दिन्हं बडु-बाण लींगं उर्मलीय भारतं धिम्नं धूमे धूललिंडिंग बनते मा। दिन धिमने धक्क धारीली धोल दे दिन्हं उर्मलीय दा भंडारं दी मी? मार्टिम वैशी मुज-धाररं दे संधो पर्वतली विमिनो उर्यं दे वैशी सफु-टुटे ठे भंडारं उर्यं पह दिन धिमने वही बॉल दे दिन गुड-चिंड हे मूणम-उर्मलीय धिमं ने सहमन दे मंडू वृत्तीय भूपट यह। गुड धुनें हवें-धार दिन्हं पूपद ने आर्म अर्पिंह चिंड-लिणी दे धिमाध-धरण दे भंडारी यह। दिस्कातं दे दिस्कं चिंडं ढँ चिंड-सिंही दे रहस्य विग्यं यह।

चिंड-लिणी धिमाध-धरण दे धिमाधा भझगण हे। चिंड-लिणी दे दिस्कं ढँ चिंड-धूलधूल दिन्हं (धिमिअथ) बिरं संगं यह। चिंड-सिंही दे चिंड धिमं धमाग देवींग-देवींग स्वभाव बलजं लींगं उर्मलीय दी भंडारं उर्मलीय दा स्वरस्तं दा भंड यह धुनणी, धिमंत, तुम्मर-तुम्मर, हवेंग मधुर ब्रजं भंडी चिंड-धूलधूल दिस्कं दूरं मात्र। चिंड-सिंही दिन्हं दिन्हं चिंड धुना धुना बिमण ली लिणी दे चिंडां दे दिस्कं ढँ चिंड-सिंही दे चिंड-लिणी बिमण संगं यह। ब्रज-सिंही दे दिस्कं मधुर ब्रज-भंडी ढँ चिंड भंड यह धउं मधुर ब्रजं यह। मूणम दी भंडी उर्मलीय ब्रज-सिंही दिन्हं आ.
वे चौथे, ताही, त्रिवण मधेम भवम बी देष करी। दिनम- 
सिक्खी शे चंद नवें भंडभंगूं शी बांडा हुं पंजोट बलम महावे 
उठ उं दिति हुं खाड़-भुविन चिंता विउ वन्य है।

सिक्खी न ह दिवास

ब्या-सिक्खी शा भारत में “खाड़-भुविन लिपी” का दिवास है।

सिक्खी शी दिन पुष्ण दिन शी दिवास नी, बांड लिपी दिन पुष्ण दिन 
उस शी नव में दिन-दिन घट दिवास नी। खाड़-भुविन लिपी दिन 
पुष्ण लिपी-चिंता दिवास नी न बुढ़े-बुढ़े पक्ष हुं पुष्ण वलम है। शीती 
लिपी खाड़-भुविन लिपी शी बुढ़े भिमाल है। शीती लिपी दिन पुढ़े- 
बुढ़े पक्ष हुं लिपी-चिंता पक्ष हुं दिन भवम दिवास नी। दिन 
पक्ष हुं मसलीम लिपी शी बुढ़े नंदलिन नी। दिन 
पक्ष हुं मसलीम लिपी शी बुढ़े भिमाल है। दिन 
पक्ष हुं मसलीम लिपी शी बुढ़े नंदलिन नी।
घूणभी लिखी

बापु दी मां के पुत्री लिखी या ता घूणभी है। घूणभी दीं बापीं बढ़े। मिस्ट्री रिखी या शिवाव बृहा है। बृहा उस में अधिक और उसके बाहिर भी नहीं। घूणभी दीवारिजीकरण उच्च उपाधिर्याओं को उसके द्वारा हृदय, हृदय और हृदय के लिये शिवाव संगठित लिखित है। घूणभी के लिये आज नहीं है। घूणभी दीवारिजीकरण उच्च उपाधिर्याओं को उसके द्वारा हृदय, हृदय और हृदय के लिये शिवाव संगठित लिखित है। घूणभी के लिये आज नहीं है। घूणभी दीवारिजीकरण उच्च उपाधिर्याओं को उसके द्वारा हृदय, हृदय और हृदय के लिये शिवाव संगठित लिखित है। घूणभी के लिये आज नहीं है।
अभिव दी घरभी सिपी दिंड बृंज़ 39 (छठड़हारी) भंडार-मंवेद गर। मंवेद मंवेद भंडार ब्लयं ब्लयं गर। घरभी, घरभी दौंगा घंजे ढंगे में माँ एवं मे देंगे सिंध संजी दै। अभिव हें शबाद सिद्ध मम पीड़ा लिजा, घरभी दिंड दी उच्चती आहुँदौ सी। घरभी हें दी रौंदी-रौंदी ब्लयं ब्लयं आलह गूँदौ दिंड लिप्तुं दिवंज वेशीमं गर, ने आज़-वशिः साही गर।

घरभी हें दौंदी दैनी दे संतदी मैंली सा दिवंज वेशीम। दौंदी मैंली हें दुलभ सिपी भूग दुलभ सिपी हें दुवित सिपी दिवंज वेशी। दुवित सिपी हें दी म्याट सिपी दा मत जेब्हाम भूग म्याट सिपी हें दी दिवंज वेशी। हस पूर्वक घरभी ढंग-ढंग पदावं भुर बदलीमं देशीमं ब्लयं ब्लयं पूर्वक सिपीमं मिदं देशीमं, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल, बंगाल आदि दैर्घ्यं देशीमं। पंजाबी दिंड घरभी हें दिवंज दैनी, दंडे, दंडमहिली, महक्की, अवाह-रागावी, सिंप-आउदयबाह आदि सिपीमं म्याट सिपी हें दिवंजमीमं गर।

म्याट सिपी

निद्रें वि दुवित सिपीमं है, म्याट सिपी दुवित सिपी हें दिवंज है भूग दुलभ सिपी दी मंवेद है। म्याट सिपी वजही भूग दौंदी-पैडिमं ब्लयं दे दिंड देंडे ब्लयं दी जगत-विद्वाची दिपी गदी है। हिम ढंग दी वास्तव ही भवनी म्याट, प्राोहत पूँझरे दी रावनी भूग परं पंजाबी सिपी दी दैर्घ्यं दी जगत-विद्वाची दिपी।

दिवंजत अभिव वजही वास्तव दैनी दिंड म्याट सिपी है दा मत ढंग हें पत्रें भवने दौंदी दौंदी-रात्रे दे भिन्निहारं दिंड भिन्निहारं दुःस्थं दा मम पैड़ी-पामी माती है। इस्म मटें दे दिंड मातां दिंड दी नारा, गुआकाट भूपे भूपे भूपे, अधिक रंग धेरी में भास्तव मर ढंग में धरबे म्याट अभिम भिन्निहारिं दर। दिउं दर मम पैड़ी-पामी माती हो। भवनी माता है। हिम ढंग दी विदशं बंगाल दैनी दिंड म्याट सिपी है अभिम दौंदी पूँझए दुःकी दर। हिम पूर्वक म्याट सिपी है देवदूं दर केवल वास्तव दे पंजाबी दिंड ही देवदूं दर केवल वास्तव ही पंजाबी दर। नाष्टमां गंगाप (बंगाल), भुगु, भुगु, मटें, बंगाल भूग परं पूँझरे दिंड दुंड़ी दे है।

म्याट म्याटकी डे हे में दिहिङ्गा ही देवदूं है। हिमें देवदूं डे हे हे वास्तव हे हे “म्याट म्याट” पिर्ना ही। हिमें बरने वास्तव दी पूँझरे सिपी हूं म्याट सिपी बिरा नांता सिपा है ने भोंप डेंब
बिमे रा खिमे रुप बिंच पुरुषित है। वसम्मीत वही बिंच प्राकृति रा पुजीत रुप उंच री बेहद सांविभव शुभृवा वतसे वह वह रुक वसम्मीत री मिदराल हे अनमोल मातड़ हूं रस्स वतसे ईम ही गां ईन्हुं हँ समाधित वर बिंच है। लम्बी पत्री ते भेजे-उड़े ते वसम्मीत, अंगवाण, प्रङ्खाण आर्थ बिंच प्राकृति लिभी बिंच दिलिवाश्च अनुद सिखिये देके मुख हे दाशे मत श्रेय मातड़ हा अतएल दिवाम मुख उठे त्या धा धन्य ही। मातड़ हे अनाले दिवाम गुप्त हूं खिलकी मातड़ विरा नाम है। छिने खिलकी मातड़ दे ती सिंप-आउदिवा, झाडटिबी, अन्य-रागाली, टवली, लंडे अने रागामी लिभीम खिलिये दे रख है वसम्मीत दे हे हे विकाशा उंच रेंध-रेंध दिलिवाश्च बिंच पुरुषित देशीया रख। हिउँगसो मात्रीम खिलिये दे मांडे दिंबे धूल-मूल दो रावणी दिम उंच दे हिउँगसो हे दि हिउँगसो दिंबे अनमोल अंधक की देखे दी मांडे दे मात्राद वाक्षी भावन बिंच भिक्षी ही।

प्रेमस्सा बिभी-प्रवाटना सा बेसा-शृंदर रेठ शृंगा है :-

प्रर्णमध्य बिभी

ंडुर नेवली

ईश्वर नेवली

तावण बिभी

वुटुल बिभी

ंडेक रुग्नाद मातर

ंडेक तवाली

अन्य-रागाली

रुग्नाद

प्रर्ण-बिभीम

प्रर्णान्द बिंच मातड़, तवाली, लंडे, सिंप-आउदिवा, गाम्बरी, झाडटिबी, खिलिये पुरुषित देशीया रख। मातड़ हा गेडाव वसम्मीत उंच असर्न सा प्रवार उंच मी। ईम दिंबे दी तवाली मातड़ दुर्वाण्ड देशी में उठे उंच वसम्मीत बिंच चालू है। वह गुट वसम्मीत बिंच मातड़ ही गां ईन्हुं सिखी
गाँधीवी ना दिनाम

गाँधीवी दे दिनाम सां दुहाड़ी घरे दिनुं दे मंड-मियांड 
 देशे वड़े गर। पैरण भट दिन दे बि गाँधीवी दी खरा वाट आंवार 
 देश नी दे बोदी। गाँधीवी घर घने उहदा घाघा भंडा बस्तीना 
 पेशीपां दिँंच दिखुई भिथुई दे।

“वाट आंवार गाँधीवी आंवार घराघरे घरे दे अभो मषांड बोट बीडा”
सिंघ मांघु दिँंच बिम मांड ली बुंदुइं मींच बसी उदासे भिथरे गर।
मिया मिर्न हिनांदुर अभो दिजानी दिजियां सिंघ दी किमे मांड दे पाणाई 
गर। दिपुरी दे आपण घरने बि बीजावार दच्चे पूंढी हिर्दियकं दे 
दी गां आंवार देढ नी दे दी गाँधीवी रिखी दे बलण भिथुई दे।

सूंसे मांड दे अभंगा गाँधीवी दे चॉइंग गां तात्र देख नी मग।
पूंढ बिंग भिंग दे विंसे वांलह जं दहमे बड़ी दी आंवारी तटर “सम 
वाट घरा” दिँंचे दिंच टुन दिखी दे। वांलह वाट तटर ली दुमण मींच 
मियांड दे—

“देव बोीश दिंघबर घरा, गां आंवार चेपडं दे भांटाप।
गाँधीवी अभंगय बींसे उदास दे मिधुं दे लस वाट दे बांने।”
जींग मांड वेंवर मिर्न हिर्दिया दे बाळ “थमंगलीघरा रमे 
धामास्तीना का” हिंच दिखुइयां है। हिंच हिंच घाघा बी चेंट नी ठी 
गाँधीवी दा चॉइंग भिथुई है। उबं दिंच गर—

“नमेम सिंघ बी चेंट नी अभस गाँधीवी घराघरे।
अभो मांघुडी, धामो, तवडे भांने।”

सिंघ मांघुडी पाणारं दी वाळ-वाळिंगी हिंच हिर्दियांहि 
प्रांग दे दे सांखी दे बि गां तात्र देव नी दे आप सिंघी “दही” 
तावर घडी वडी, ने गुट ‘मी गां गां घाघा सिंघ’ हिंच लुलम दे, हिंच
सिंध गुरुधरी लिपी में मारे अंद्रां छुआं ओंकां दे मंगा, बॉंगा, आफि छुआंजाल ही छहुइ उठे गई। श्याम के अंद्व श्याम-भाँसा, बैंडी, उनके सी नमी तै जै वह श्याम के अंद्रां संबंधी सी देंती ही तै है सिंध छुआं अंद्व छिरे सांगे उठ। पंजाबी में भुजाइत्व, विद्वेंद्र वंकी पुल्टे, पंकी भम बंदी, दिंग बंदी-भांसा अंद्रें देंती तै भूल झांलांवर पूरुं रतल बने बुच तिच तप्तांवर छी उठ। गुड़ि रतल देंद नी तै आप्टे तै बुनाले तै अंब नंबर हिंच पूरवलं अंद्रां है वै हैंग्व-प्रभ हसु वटली सी छुआंजाल बीली ही। सिंध दे सरां तै वि गुरुधरी रफनी मी चंद्र सी, गुड़ि अंद्रां देंद नी मांग गुड़ि देंद नी है तीन घटानी, हिंच उं भुजांवर ठूंगाव हिंच अंब बुजडी सांगी मी।

इंस माफ़ गोरे गुरे है वि गुरुधरी या अंद्रांवर मंड़े वै की? इंस हाँ विक्षेण निःस्र आशिमा? हिंच उं अभी देंर आहें उं वि बुजडी चीमः सतीमः लिपीमः ला मंगा “घुमरी” लिपी है। धुमरी ही छुआंजे बैली हठे हूजाव मिली अंद्रें हूजाव मिली तै हिंच हिंच मिली अंद्रें हिंच मिली तै जी मार्का जहे मार्का दे अंद्रव-तणावी, सिंघा-आउविवा, संबे भाग्नसरी, वेंटवैवली, बैंची, गुरुधरी भाँसी लिपीमः लिखसीमः रत। मार्का दे नूरांजी मार्का जहे ठूंगे मार्का दे तूथ उठ। मार्का जहे गुरुधरी में नथिपण मांघे बिंसरां दीमः गांवां देशपतेता उठ। से वी सिंघ है गुरुधरी का निःस्र अंद्रव-तणावी तै भिकामा है वह हिंच मंड एल्फेशन तरजा। इंस माफ़ गोरे गुरे है वि गुरुधरी लिख नथिपण दीमः तूथ-उगासी ही लिपी है। धुमरी मार्का दे तूथ मार्का ही मंडमाथ है!” नव शंस विभागलांबत मांघे डा। उनके लिंघे सिंघ बैली है वि गुरुधरी या नथिम नामां तै जी देशिमा भिकामा है। पंजाब दे माफिउं हिंच ही मार्का दे भूलम दे उनके लिंघे उठ। “विभाग बदलाविसी” (1730 श्री) हिंच पांजे पूरुं काली माफ़ी हिंच हिंच मार्का भीवइ उठ-
Gurubhava ka Shabda Ratna


<table>
<thead>
<tr>
<th>गुरूमुखी</th>
<th>वर्ण-भाषा</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>गुरूमुखी सी में लिख देंगे वर्ण-भाषा के ट्रॉम्स का विभाजन दिये हुए</td>
<td>भ</td>
</tr>
<tr>
<td>व</td>
<td>ध</td>
</tr>
<tr>
<td>च</td>
<td>ञ</td>
</tr>
<tr>
<td>ट</td>
<td>ठ</td>
</tr>
<tr>
<td>उ</td>
<td>घ</td>
</tr>
<tr>
<td>य</td>
<td>ह</td>
</tr>
</tbody>
</table>
| ट्रॉम्स पैटर्न भाषा उत्तर। ट्रॉम्सं मिर, उत्तर दानी युसीफ़ ठों पुनरारंभ करी ग, ध, ना, न, ड अनु अर्थ हे उत्तर भाषा उत्तर का समाप्त वर्म लिखा विषय है।

ट्रॉम्स भाषाओं में लिख गुरूमुखी लिखी विभिन्न स्वाधीन भाषाओं की उत्तर:

“भ, भ, ठ, ठ, ठ, ठ, ठ, ठ, ठ, ठ” स्वाधीन भाषाओं की लिख ट्रॉम्स भाषा उत्तर की विषय भाषा है।

हवन से लिख-भाषाओं में लिख गुरूमुखी ची विभिन्न विभिन्न भाषा उत्तर की उत्तर की है। लिख उत्तर गुरूमुखी लिखी दे विभिन्न पृष्ठ उत्तर।

1. कवर
2. स्वाधीन-भाषाओं
3. भाषा-सिंदूर

स्वाधीन-भाषाओं से से पृष्ठ अध्ययन-सिंदूर भाषागती विभिन्न कई वर्तमान उत्तर, दूसरे मात्र हे अर्थ ही दूसरे सिंदूर, सीतां से वह समय उत्तर। लिख सिंदूर स्वाधीन-भाषाओं से वर्तमान उत्तर। मात्रा स्वाधीन-भाषाओं स्वाधीन विभिन्न सीतां वर्तमान भाषाओं उत्तर। सिंदूर दूसरे गुरूमुखी दे लिखी-पृष्ठ दा मंशय है, भाषा स्वाधीन लिख-विभिन्न भाषाओं दूसरे ही स्वाधीन दे दूसरे विभिन्न दूसरे पृष्ठ दो मंशय है। लिख से संख्या दूसरे ही गुरूमुखी दे व.ध.जा, भाषा मात्र ही लिख-सिंदूर असल विभिन्न व + भ, ध + भ, ना + भ दे से पृष्ठ घुटात विभिन्न उत्तर,
पंसायी ब्रान्त देव गुरुभैर

पंसायी ब्रान्त देव गुरुभैर दा चिन्ता मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है। पंसायी ब्रान्त का लिखत मंथि ब्रान्त है।
आपूर्ति चेंगे उन्हें दिखाओगे दृष्टि जेने माहूं आती है वि इंसानी रूप झाड़ी (जुगादिव) एक है वि इंसानी रूप वजन आहेत है। पर जागरूक रूपां-भास्व दिख रूप किसम रामें बेटी खेड़ा लिपी-सिद्ध तरी है। दीव दर्जनी उन उने इंसानी गुड़े रूप एक दुश्चिन बात न के गए। बुझु, भंडार, ज्ञान, भारत खासते है रहें ले पैरों निजाम हैट निक गए, आक्ष प्रक्रिया विश्लेषण है दिये रूप के ती कर्मचारी में व्यक्त है। दिमे उद्घं त, ध, ध, ध, ध दिये पंस अवस्था की इंसानी लाभ रूप हाली प्रतीत हूँ जूता बसे गए।

गुंगुप्ती लिपि है उत्त लिपियाँ

इंसानी रूप हूँ लिपइ रूप ही देख लिपियाँ त्वादर्शन गए। दीव है गुंगुप्ती लिपि निश्चित ही देखुँ इंसानी रूप हूँ लिपइ रूप बीड़ी सा गई है अते दूसरी है इंसानी-दियुक्त लिपि, निश्चित हूँ इंसानी रूप इंसानी रूप हूँ लिपइ रूप देखुँ दियुक्त सिद्ध ना लियाँ। गुंगुप्ती लिपि उं इंसानी ही देखजी ही धृष्ट है, दिये लिये भारत है भारती रुपी इंसानी गायी पर इंसानी-दियुक्त लिपि वाजळे देम दी रीमत लिपि उं अवस्था लिपी गईं इंसानी, दियुक्त लिपइ देवी इंसानी गायी है। धरणे गुंगुप्ती लिपि नियुक्त इंसानी रूप इंसानी रूप धरणे गई तथ्यक है पर इंसानी-दियुक्त लिपि हूँ दिये हैं देम धृष्ट नर्तमं मसीह देवहूँ नामत बीढ़ा नांद है। दिये दिये दियुक्तमतिवेदन समस्या है वि उत सभांत दीम्म आपहाम्म दियुक्त देव त्वादेवलोकां पंतीवात उन्मीतां गए। आपहाम्म दीम्म पंतीवात चेंग गए, इंसानी लीम्म चेंग गए अते इंसानी लीम्म पंतीवात चेंग गए। दियुक्त सांस्कृति व्यवस्थाम तुषीवात हूँ दिये लिपि सति उं देव उं देव सति त्वादे विषय तवां तथा दिये हैं।

ऐसे प्रति सेवा आपः

मेन्स-दीयुक्त मिलविटा-सलड मिल उं। आपस्तेता-मुहनसी व्यवस्थाद्वार। मेन्सआउं-उचितता। धृष्टीव-धृष्टिव। महान-महान।
अधिवेशन

1. लिखिया कैसे बाहर है? ध्यान दें भावना वाले समय सक्षम?
2. लिखाया दें तिलिस्म गाते उमें भी समय है? उचन करें।
3. जगघरी लिखिया दें तिलिस्म दें तिलिस्म गाते मंदिर मानवाली दिशा।
4. जगघरी लिखिया पंक्ति विषय लिप्तत लड़ी विवें डें कुछ तोड़ो ते?

बंधुता पल्ले मानवाली दिशा।
5. जगघरी लिखिया का रित तां मिरे ठिकाना? मंदिर समे लिखिया।
6. जगघरी ली ली ली मधु-भगु तुते उत्सवी संतुत संतुत वे तिर्थ देने भावना वाले मंदिर में लिखिया लाल वाल।
7. ‘जगघरी लिखिया डुरी लिखिया ते’, तिर्था किंवा तुते मंदिर ना घर हिरीहार है? उचन करें।
8. ली ली ली ली डुरी गांव मन्दिरस्थ है घरगुटियाँ है? उचन करें।
9. जगघरी लिखिया दे पंक्ति विषय विषय का भावना विषय विै-विगा ते?

10. जगघरी लिखिया वाले मंदिर मानवाली दिशा।
ਪ੍ਰੂੜੀ-ਗਿਆਨਵੰਡੀ

ਪੰਜਾਬੀ (ਰੇਖਾਂ ਵਿੱਚ)

ਪ੍ਰੂੜੀ-ਪ੍ਰੁੱਢ ਅੱਠੀ ਅੰਵਰ-ਹੀਡ

ਲਿਪਣੀ ਪੇਪਰ : 90 ਅੰਵ
ਅੰਵਾਲਿਕ ਭੁਜਾਵਤ : 10 ਅੰਵ
ਸੰਖੇ : 3 ਪੇਪਰ
ਵੱਲ : 100 ਅੰਵ

<table>
<thead>
<tr>
<th>ਤਨੀ</th>
<th>ਪ੍ਰੂੜੀ-ਪ੍ਰੁੱਢ</th>
<th>ਅੰਵ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>ਪੰਜਾਬੀ-ਵਾਣੀ : ਆਪਣਵਾਲਾ ਪੰਜਾਬੀ-ਵਾਣੀ (ਰੇਖਾਂ ਦੇ ਦਿਖਾਈ)</td>
<td>39</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>ਪੰਜਾਬੀ ਬਿਕਲਵ : ਸਰਬਜਾਤੀ ਅੰਵ</td>
<td>27</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਸਵਾ ਅੱਠੀ ਹੁਣਾਹੁਣੀ ਲੋਕ</td>
<td>12</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>ਪੰਜਾਬੀ ਹੋਈ ਵਿਸ਼ਵਨਾਟਾਂ ਤੇ ਪਹਾੜੀਆਂ</td>
<td>12</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>90</td>
</tr>
</tbody>
</table>

ਪ੍ਰੂੜੀ-ਵਾਣੀ ਦੀ ਕਲਾ-ਟੇਪਾ

ਅਜੀਤਾਪਾਣੀ, ਹਰਿਸ਼ ਪਾਣੀ, ਪੰਜਾਬ ਸਦੀਤਾਨ ਅੱਠੀ
ਪ੍ਰਤੀਭਾਵਾਂ ਲਹੀ ਵਿਕਲਪ ਵਿਗਿਆਨਾਂ

ਪ੍ਰੂੜੀ ਸੀ. 1 ਸਾਧਨੀ ਪ੍ਰੂੜੀ-ਪ੍ਰੁੱਢ ਦੇ ਅਧਾਰੀ ਇੱਕ 10 ਅੰਵਰ ਦੇ ਕਾਰਵਾਣਾਂ ਰਾਸਤਾ ਪੂਰਨ ਹੈ ਸਟੋਨੂੰ। ਇੱਥੇ ਪ੍ਰੂੜੀ ਚਰਨ-ਚੇਟ, ਢੌਂ/ਗੁਲੋਂ, ਤਸਵੀਰ ਵਾਣਾਂ ਦੇ ਤੀਜੇ ਪ੍ਰੂੜੀ ਦੇ ਦੁਆਰਾ ਦੇਨੇ ਘੇਸਤੇ ਹੋਣਾ ਚਾਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਅੰਵਰ ਦੀ ਚੇਟ ਵੇਟਾ ਲਿਖੇ ਅਧਾਰ ਅਕਸਰ ਵੇਟਾਡੀ -

ਆਪਣਵਾਲਾ ਪੰਜਾਬੀ-ਵਾਣੀ (ਰੇਖਾਂ ਦੇ ਦਿਖਾਈ) ਸ੍ਰਹਨ-1

(ਦੇ) ਆਪਣਵਾਲਾ-ਵਾਣੀ : 4 ਅੰਵਰ (ਦੇ ਪ੍ਰੂੜੀ ਕਲਾਟਾ ਰਾ ਸਾਡੀ ਦੀ ਕਲਾ ਦਾ ਸਾਡੀ ਮੰਚੀਆਂ, ਦੇ ਪ੍ਰੂੜੀ ਪ੍ਰੁੱਢ ਸਭਾਵੀ ਇੱਕ ਆਪਣਵਾਲਾ ਵੇਟਾਡੀ।

51
(अ) आपकी हिंदी-हिंदीशार : 2 आंक (हिंदी पृष्ठ संख्या 2 एंड) लख लख द्वितीया, भ्रम से लेखन स्पेक्ट्रम की तरह संख्या 2 एंड लख द्वितीया लख।

(इ) पंजाउँच बांध-बंध : 4 आंक
- हिंदी पृष्ठ बांध सी घटता/किन्नर/आउट लख संख्या 2 एंड लख
- हिंदी पृष्ठ वाक्य सी तता में पृष्ठ
- दे पृष्ठ दिशागांवेशी 4 मजबूती तता में पृष्ठ

पृष्ठ हं. 2 आपुष्टिक पर्याय-वर्ण (रचनाकर दे हिंदीगम) पात-पृष्ठ दे आपुष्टिक-वर्ण 'चे राह बंध से वे विष्णु दे ती पृष्ठ में हिंदी विष्णुवर्ण वर्तमान लखनी विङ्गुरं नाचेवा।

पृष्ठ हं. 3 आपुष्टिक पंजाऊँच-बंधि (रचनाकर दे हिंदीगम) पात-पृष्ठ दे हिंदी दे वाक्य दे दूसरे दे वे विष्णु दे ते राही बांध हिंदी विङ्गुरं नाचेवा।

पृष्ठ हं. 4 आपुष्टिक पंजाऊँच-बंधि (रचनाकर दे हिंदीगम) पात-पृष्ठ दे 'पंजाऊँच बंधि दा में हिंदीगम' बांध दे विष्णु दे दे पृष्ठ दे दे वे विष्णु दे ते हिंदी विङ्गुरं नाचेवा।

पृष्ठ हं. 5 आपकी हिंदी-हिंदीशार बांध-पृष्ठ दे हिंदी चार दे हिंदी बांध दे विष्णु दे दे हिंदी विङ्गुरं नाचेवा।

पृष्ठ हं. 6 आपकी हिंदी-हिंदीशार हिंदी दे संख्या 2 एंड दे दे विष्णु दे दे हिंदी विङ्गुरं नाचेवा।

पृष्ठ हं. 7 पंजाऊँच बांध-बंधि पात-पृष्ठ दे आपुष्टिक, पंजाऊँच बांधि दे वाक्य दे हिंदी दे दूसरे दे हिंदी विङ्गुरं नाचेवा।

पृष्ठ हं. 8 पंजाऊँच बांध-बंधि पात-पृष्ठ दे आपुष्टिक, पंजाऊँच बांधि दे दूसरे दे हिंदी दे दूसरे दे हिंदी विङ्गुरं नाचेवा।
(०) हे दुपारमध्ये समय देने वेळा चंद्र विमान से तवमासी पृष्ठभूमि लिंग दूधाण स्थापन करणे।
(अ) हे तवमासी पृष्ठभूमि देने समय देने वेळा चंद्र मध्ये दुधाण लिंग भित्ररूप दूध पृष्ठभूमि समेत करा।

5+5=10 आंक

निजगतिक पथ-पृष्ठभूमि:
1. आपूर्तिक पृष्ठभूमि-वर्ग (लक्ष्य देने विक्षेपण)
2. अध्ययन-हिंदी टुटीशना
3. पृष्ठभूमि दुधाण-वेय

पूर्ववर्तमान : पृष्ठभूमि मध्ये निष्पक्ष बंधन।
1. उद्देशित प्रश्नः

(ि) 'पिसळे की बिंदु' बिंदु दिया तालमेल विष तू विष विष नहीं है?
(अ) 'मिले माध्यम पूर्णी ठुंड' बिंदु .............. की सिधी रही है?
(े) अभियोग पूर्ण इक्ष्यथे की सिधी बिंदु विष किती है?
(ि) वर्तन मंड़ा (अ) इधियाय राडिया (ि) एल्युमीनियम रा फिलस (ि) अभावी।
(ि) 'बृह विष दंग तेजग सप्तग बिंदु' बिंदु अठारह विष्ये बजब बजसे विष बिषे किते बिजटो?
(ि) केशर दे रेंज रा तबथा जी?
(ि) त्र. उपविद्य निव दिशाएं रा निविकास महत्त्वपूर्ण-आप सिनथा है?
(े) पूर्णी-व्हारा दी घडसं दिशे परिधि प्रबंधी विम दी?
(ि) बिंदु दिखी गुरुभरी, गुर्जर आफ्ते मजदूर बांटनी लिघीम दी नित्यरत्न दी?
(ि) फली घंटे:

टवलाली पूंछाणी दा अभाव .............. दुईतालवा है।
(ि) उद्ध निविकास बिस्म नीति दे संग बालवा:

पुर्णी, उपविद निवे दिया ठुंडी देंसी संतो। 10×1=10

2. उद्ध निविकास वर्ज-टेक्निकें दौंडे विमे दे दी पूर्णा साइन्ड दिमाक्सक वहे:

(ि) ताप दे मण्ड, घंघर खामे दी सिंघ मार, बाँझ सुध बंध बदल साम वि निमात उठा।

घंघर-पालको सा मजदूर बुंदें, सपथां दें,

यक्ष ठुंडे 'अथिका' दे विमान अभाव उठा।
55

(अ) इंग्रजी से विश्लेषण

इंग्रजी से पहले भ्रमण सिद्धात्विक रूप होगा कि वैमध्य द्वारा उच्च स्तर,

वापस, व्यक्तिगत, ग्राम पूंजी के लिए, वापसियों को बड़ा स्तर।

(ब) सिंह के बंधन संबंधित मीली देवी

टॉवरां ही भौगोलिक-पौरी है

सिंह के बंधे वेंचर धनों है

पशु द्वारा राशि वर्ग है वृङ्ग संख्या नेत्रवे नींबू, अनुपस्थितता में सूक्ष्म व नैसर्गिक है नेत्रवे।

(ग) वौँ तो अनुवां बना दें

वौँ तो ब्रह्मा वही सुभाष है

वौँ तो धनी चुनौंतियाँ

अंतराल वृङ्ग चुङ्ग उं रेबरा, उड़ीसा

सम्पूर्ण है। 7+7=14 अंब

3. विश्लेषण व वैश्विक वाहन सिद्धि

पृथ्वी, मिथुन च रित, मेषु राशि पृथ्वी। 6 अंब

4. आधुनिक विज्ञान से भौगोलिक सुविधाओं 'उं' टैंट लिखिए।

नां

पृथ्वी सिद्ध ही वाध्य वाला संपादणी विधि वाँछपूर्व टैंट लिखिए। 15 अंब

5. विश्लेषण व वृत्तां द्वारा उद्भव किये होए?

(०) 'भावना विधि मदत करता हैं' चेतन र मुद्दा मदद देने 'वाहनीय' र गलत्ते लेखन देने बड़ी है विविध आय-वीडी पतला मुदती?

(अ) मनुष्य सिद्धि योग देने अनुपस्थित हिमालयाँ, वह दो विचार भूगोल वीडे उठ?

(ब) मार्वनेशियी भौगोलिक समय से अनुपस्थित मुरधर वैसे की बनने उठ?

5+5=10 अंब

6. विश्लेषण महत्वपूर्ण-अंब द्वारा मात्र सिद्धि किये

(०) शृंखला घरे शृंखला के लिए

(अ) मापें कूस्ते पैता कैमिल। 15 अंब
7. बिमे दे पृष्ठांत दे गूँगा बिधेयः
(अ) पृष्ठांत गूँगा दे पहाड उड दे निम्न दे विकास मध्ये मद्दत घडी हितैः।
(ब) पृष्ठांत गूँगा दी पहाड उड़ा देखी देखी देखी।
(ज) गृहानुशासन प्रति प्रति प्रति विकास मध्ये मद्दत मद्दत मद्दत हितैः।
(ञ) वी गृहानुशासन प्रति प्रति गृह प्रश्न होगा घटना� indx घटनादृशा? उत्तर दे।

5+5=10 अभि

8. (अ) गृह समान दिनें दिनें बिमे दिनें देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी
(ञ) गृह समान दिनें दिनें बिमे दिनें देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी देखी

5+5=10 अभि

'प्राणिलक हिंदी', 'प्रविष्टता अभि'
अभि दिनें दिनें दिनें दिनें